SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal) : Madam, I feel your second suggestion would be fine. It is better to have earmarked two and a half hours from any other week day so that Members' views can also be taken note of.

THE DEPUTY CHAIRMAN: This is also reported in the paper. Now, that day will be defined when the Business Advisory Committee meets. It can be Monday, Tuesday or any other day. Two and a half hours should be reserved for Private Members' Business and it should be taken up.

SHRI O. RAJAGOPAL: The BAC is meeting on Monday.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Either the BAC may decide it or the House can decide and inform the BAC.

SHRI RAM JETHMALANI (Maharashtra) : Madam, I wish to suggest that considering the importance of the subject which we are discussing, please do free us from the tension of very rigid time constraints.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I wish I was as rigid as some other Presiding Officers were.

MOTION ON PERSISTENCE OF VIOLENCE IN GUJARAT - CONTD.

श्री राम जेठमलानी : आपके फजल की निगाह का इंतजार करता हूं।

उपसभापति : हां, जरूर, एक-दो के बाद आपका ही नाम है।

श्री राम जेठमलानी: कल आपने फजल की निगाह दिखाई थी, वह आज भी दिखाएंगी।

THE DEPUTY CHAIRMAN : I have noticed that some people were admiring that the person in the Chair was strict. So, I thought, 'let me also get some admiration' from all of you.

SHRI RAM JETHMALANI: I admire you all the times, Madam.

†**मिर्जा अब्दुल रशीद :** तो मैं अर्ज कर रहा था, गुजरात का जहां तक ताल्लुक है, गुजरात में वहां की सरकार और वहां की पुलिस ने मिल करके वहां पर जो तबाही की है, इजतमाई तौर पर अस्मतदरी की है, इजतमाई तौर पर जिंदगियां जलायी है, इजतमाई तौर पर

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

इमलाक को जलाया, कारों को जलाया गया, घरों को जलाया गया, फैक्ट्रियों को जलाया गया, गर्ज कि तबाही की गयी और इसके अलावा मैं यूं कहूंगा कि दुनिया कहती है कि मन्सूबाबंद तरीके से वहां मुस्लिमकुशी की जा रही है। यह मैं नहीं कहता हूं, यह ह्रयूमन राइट्स कमीशन कहता है। मैं नहीं कहता हूं, यह माइनारिटी कमीशन कहता हैं, यह वीमेन कमीशन कहता है, यह फैक्ट फाइंडिग कमीशन जो है, वह कहता है, यह भारत का मीडिया कहता है, इलैक्ट्रानिक मीडिया कहता है। जब हम उनकी रिपोर्ट सुनते है, देखते है तो हमारी आंखे भरोसा नहीं करती है, कान ऐतबार नहीं करते है कि क्या इन्सान इतना दरिंदा हो सकता है। इस सिलसिले में मैं यह गुजारिश करूंगा कि जहां तक हमारे मुल्क में साजिश करने का ताल्लुक है, सदियो से हमारे मुल्क के खिलाफ साजिशें हुई हैं, अरबो डॉलर यहां इन्वेस्ट होते है, यहां जमीर होते हैं, जेने खरीदी जाती है और यहां के लोगों को आपस में लड़ाया जाता है, ताने बाने को बिखेरा जाता है,तो क्या यह गोधरा का जो सानेहा है कहीं यह पाकिस्तान की डायरेक्ट साजिश तो नहीं है और हम भी इसी के पीछे खामख्वाह आपस में जलकर मर रहे है। इसकी तहकीकात और इन्क्वायरी ऊंचे लेविल पर होनी चाहिए वरना हमारे मुल्क को अमेरिका, जो सबसे सुपर पावर, ताकत रखता है, मैली आंख से नहीं देख सकता। पाकिस्तान की प्राक्सी वार की हमें परवाह नहीं है। लेकिन आपस में जलकर पड़ोसी से डर रहा है, दोस्त दोस्त से डर रहा है और बहुत बड़ा नुकसान हो गया है। खास करके पाकिस्तान जो इस वक्त जो हमारा पड़ोसी है, वह हमेशा से हमारी अंधी दुश्मनी करता है और एक डिक्टेटर मुल्क होने के नाते एक आर्मी का मुल्क होने के नाते इस वक्त इस गुजरात को लेकर सारी दुनिया में हमारे खिलाफ चिल्ला रहा है जबकि भारत ने टेरोरिज्म के मामले पर पाकिस्तान को पछाडा है। उसको सारी दुनिया में नंगा किया है और यह साबित किया है कि यह टेरोरिस्ट कंट्री है। लेकिन आज सिर्फ पाकिस्तान में ही नहीं, बल्कि दुनिया के बड़े मुमालिक, यूरोपियन कंट्रीज जो हैं, यूरोपियन यूनियन जो है, इसी तरह अमेरिका, जर्मनी, बर्तानिया, हालैड, तमाम ने कंडेम्न किया है। वे हमें दर्स देते है इन्सानियत का जिनको हम दर्स देते रहे हैं। लेकिन इन सब बातो के बावजूद (समय की घंटी) दो प्वांइट मैं कहूंगा। एक तो कश्मीर के बारे में यहां पडिंत भाईयो का जिक्र आया है।तो पडिंत भाईयों को यूं कहूंगा कि जो माइग्रेंट्स है वे हमारे यहां से कैसे निकल गए। किसने निकाला? गवर्नरी के जरिए निकाला। कितनी गाडिया उनको दी गयीं, कैसे रातो रात उनका इन्फलक्स हुआ, यह एक लम्बी कहानी है लेकिन अगर वे निकले तो उस वक्त तक जम्मू काश्मीर की कौम, काश्मीर कौम, मुकम्मिल नहीं हो सकती जब तक वे वापस नहीं आ जाते। उनके लिए एक स्पेशल पैकेज दिया है जम्मू काश्मीर की सरकार ने, लेकिन वे पैकज आज तक मंजूर नहीं हुआ है। साथ ही मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि यहां बडें बुजुर्गो ने जिक्र किया कि वहां अक्लियतें शायद महफूज नहीं हैं। मैं यूं कहना चाहूंगा कि पिछले 15 साल से एक भी हिंदु मुसलमान फसाद वहां पर नहीं हुआ बावजूद इसके कि पाकिस्तान ने वहां पर मन्दिरों में गाये काटकर रखीं और मस्जिदो में सुअरो को काटा गया। खास करके जम्मू मे, वहां पर जो हमारे हिंदू भाई अक्सरियत में हैं उनके सामने हम सिर झुकाकार सलाम करते है कि वे कभी इस बात में नहीं उलझे और न वहां एक भी वाकया हिदू मुसलमान का हुआ है, सिवाय इसके कि जो क्रास बार्डर टेरोरिस्ट्स है उन्होंने मारा है और अगर अनआफीशियली 80 हजार बेगुनाहों को इन लोगो ने हलाक किया जम्मु काश्मीर में तो 80 हजार मे रो वहां 5 हजार हमारे माइनारिटी कम्युनिटी के हिंदू भाई हो सकते हैं।

75 हजार वहां के बेगुनाह मुसलमान हैं जिनको टैरोरिस्ट्स ने मारा और इसलिए मारा कि वे भारत का नाम क्यों लेते है, भारत का साथ क्यों देते हैं। इसलिए मैं यह सफाई करना

चाहता हूं। हम गवर्नमेंट से यह अपील करेंगे कि वह पैकेज जो माइग्रेंट्स के लिए हमने सबमिट किया है, गवर्नमेंट ने सबमिट किया है, वह उनको दिया जाए, ताकि उनको काश्मीर में रीहैब्लिटेट किया जाए। सिर्फ एक बात मै और अर्ज करना चाहूंगा....(व्यवधान)...

उपसभापति : अभी नहीं ।

†**मिर्जा अब्दूल रशीद :** सिर्फ एक प्वायंट्।

उपसभापति : अभी नहीं । Well, I have to call Dr. Vijay Mallya. Please take your seat.

† **मिर्जा अब्दूल रशीद** : वन प्वायंट।.....(व्यवधान)...

उपसभापति : नहीं, एनफ। क्योंकि यह गुजरात का मामला है, कश्मीर का नहीं है।

† **मिर्जा अब्दूल रशीद** : मेरी दो-तीन तज़वीज़ हैं, जनाब। इस वक्त हमारे मुल्क में मुसलमान पिछडा हुआ है। अगर इनको कुछ अर्से के लिए एसटी डिक्लेयर किया जाए तो इनके साथ यह कंफीडेस बिल्डिंग की बात हो सकती है। एडमिनिस्ट्रेशन में, पुलिस मेंऔर दूसरी रेक्रूमेंट में इनको स्पेशल मौका दिया जाए ताकि इनको कंफीडेंस बिल्डिंग हो जाए और खास कर 355 आर्टीकल के तहत जो मरकजी सरकार ने अब इस मोशन के साथ दिया है, हमें खुशी है कि ये अब सैंटर से मॉनिटर करेंगे और रिलीफ को सहीं मायनों में तकसीम करेंगे और तकसीम करेंगे और तकसीम करते हूए उन कमेटियों में जिनका फेस हो मुसलमान का कंफीडेंस बिलड करने के लिए वह भी उनमें रखें और सहीं तकसीम भी हो और खास कर जितनी भी हमारी नेशनल लेवल की पार्टीज हैं वे राजनीतिक से ऊपर उठ कर जब तक वे इकट्टे हो कर जैसे यहां पर तज़वीज़ आई है नहीं चलेंगे तब तक जल्दी में ये आग बुझने वाली नहीं है। और इसी तरह समाजी जो तंजीमें है हमारी उनको भी इस्तेमाल करना चाहिए। एक बात मैं यूं कहूंगा कि यहां एक हमारे आपोजीशन के लीडर हैं।....(व्यवधान)....

उपसभापति : आप कितनी बातें कहेंगें? आपका टाइम खत्म हो गया है। आप बैठ जाइये। नहीं, आई हैव टू काल समवन।प्लीज़, टेक यूअर सीट।

† **मिर्जा अब्दूल रशीद :** थैक यू, मैडम।

DR. VIJAY MALLYA (Karnataka): Hon'ble Deputy Chairperson, thank you. Rising to speak on the floor of this august House is an awe-inspiring moment in my life. Thank you, Madam, for this opportunity to deliver my maiden speech. I am acutely aware of the fact that many speakers have exceeded the time that you would like to allocate. So, I shall

---

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

be brief, and hopefully, crave your indulgence, some time, in the future, even though I belong to the elite backbenchers' club. Madam, the two Houses of Parliament collectively embody the will of one billion citizens of this great nation. These Houses decide the destiny of our children, and the proceedings, since Independence, contain contributions of many great citizens of this country.

Madam, as a committed citizen, a businessman, like anyone else, is entitled to his dream, a dream of participating in the process, which gives direction to the future of our country. Selfless public spirit should be the guiding principle of all of us, who are privileged to be the Members of Parliament.

I speak today, but sadly, in the context of death and destruction in the State of Gujarat, which over decades, has been the epitome of industrial progress. The people of Gujarat are known to be great entrepreneurs, and rather than set an example for our entrepreneurs of tomorrow, our children are silent witnesses to the unmindful carnage that is taking place in that State.

Madam, the accountability for -performance in business is no different to accountability of governance. This great nation has to think of tomorrow and beyond, and the standards of performance and accountability by both, Government and business, must set an example for the future. Instead of creating benchmarks of progress, we have lost seven precious days of the Parliamentary time disagreeing, not about the facts of actual violence and loss of life in the State of Gujarat, but, whether the Government of Gujarat should be held accountable, and, therefore, reprimanded for its failure to govern. Assuming for a moment, Madam, that the Government of India acknowledged certain lapses, does that, in fact, change our future? Does an admission that the VHP or the Bajrang Dal are communal in their outlook, guarantee the future of the children of this country? And that is a subject, which I think, should be deliberated upon by all of us.

Madam, this is the Budget Session of Parliament, and our hon. Finance Minister has been branded as a rollback Finance Minister. Frankly, I applaud the Finance Minister for his initiatives in his original Budget. Sadly, political compulsions have taken precedence over fiscal necessities. Likewise, in the case of Gujarat, we need accountability for performance. Political will is sometimes at cross-purposes with practicality, and the reality of need to improve the lives of the children of our country.

I heard the hon. Finance Minister speak about the impact of-violence in Gujarat on the international business community. He stated that the violence in that State would not affect foreign direct investment in India, to any significant extent. While I am pleased to hear this, I beg to disagree with him, as it is not only foreign direct investment, but also domestic investment in industry that is important. As a businessman who has successfully operated in the State of Gujarat for over two decades, I must confess that I will be reluctant to invest further in a State which cannot preserve communal harmony and discipline.

India has historically been a repository of knowledge. New vistas are opening up, and the world is changing. Information technology, biotechnology, healthcare, drugs and pharmaceuticals and areas of e-entertainment are becoming vitally important. To deepen and broaden this process of development, the need of the hour is to extend education to rural areas and carry its benefits to every section of the society. We must bridge the digital gap sooner rather than later. Unfortunately, very little of our true potential has been realised. We seem to be spending a lot of time debating issues with political focus, rather than those with purposeful economic focus. The debate on Gujarat is only one such example.

There is a visible gap between what we can achieve and what we have achieved. Even if we appreciate the political compulsions in a democratic set up, why should the basic agenda for development and eradication of poverty be deferred, year after year, and made subservient to political commentary? Must the people of India and our, some 450 million, youths remain hostages for ever to the Governments that may be in office, but don't exercise power, because of political pressures, and to the vision of several leaders who succumb to various pressures within their own organisations, forgetting that it is our duty to create a better future not for ourselves, but for the children of India.

It is time that young blood and dynamism is injected into the Government that can balance the many apparently conflicting demands and decide on how to execute our vision for the future. These are the very basics of good governance that will visibly set benchmarks of progress with multiple dimensions and, slowly but surely, stimulate the minds of those misguided and frustrated people, who have nothing better to do than indulge in acts of violence.

I request the Government of India to create an example in accountability for performance; to create a benchmark for our future generations; to send a clear message that we are a peaceful secular

society, with the will to occupy our pride of place in the world, not for ever to be referred as a Third World or emerging economy.

Let the failure of performance of the Government in Gujarat be an eye-opener. Let us not indulge in recriminations; but set an example on how the failure in governance should be dealt with, so that these unfortunate happenings are eradicated and never repeated. Instead, let the people of Gujarat continue to draw on their repository of knowledge and skills so that their State can, once again, assume the status of being a major contributor to the continued economic development of this nation.

I hope that all those who are privileged to be Members of this august House would devote their time, skills and energies to the emergence of a disciplined, result-oriented India, where citizens belonging to different castes, creed and religion, from all walks of life, can live with positive hope and actually look forward to the overall prosperity of future generations in the making of a great nation that will occupy its rightful place in the developed world. Thank you, Madam.

SHRI RAM JETHMALANI : Madam, we are speaking on a subject which evokes in me painful memories which have been trying for the last 50 years to erase from my consciousness. What has happened in Gujarat reminds me of those dark days of Partition through which I have lived. After the Partition and uprootment, I started life in a refugee camp in Bombay. I have lived through that harsh life; cruel and callous life; undignified life. I know what it means to be a refugee and what it means to be an inmate of a refugee camp. So long as there is one refugee camp in India, emotionally, I am a resident of that camp, whether that camp is situated in Gujarat or in Jammu or in any part of the country. It is still as disgraceful phenomenon as disgraceful it can be. I wish to assure particularly my Muslim friends* that I share their anguish and agony at the plight of those living today in the refugee camps in Gujarat. Madam, I would not have spoken because I have no inclination to traverse the ground which has already been traversed. I do-not think that I will participate in any controversial issue and make final judgements .on those issues. I will avoid all matters which cause heat and acrimony. But I do wish to take this opportunity to introduce this House to what was the position of India in the international Comity of Nations before Gujarat and what it has become after Gujarat. I hope to introduce you to those who perpetrated Godhra and to those who perpetrated the aftermath of Godhra. Some of the controversial issues require evidence and perhaps examination. Lawyers would recognise

3.00 p.m.

even cross examination as the necessity. I have no access to evidence to which my hon. friends in the Government have; some distinguished Members of .he Opposition have and which my friend Shri Kapil Sibal has. He is a very experienced criminal lawyer, वह तो लिफाफा देखकर मजमून भांप लेते है I have *no* such art. I have no such craft. Therefore, I will avoid some of those judgements which he had pronounced yesterday. I propose to deal with more constructive issues which arise and which I think are of paramount importance in this debate. Firstly, what is the lesson that I learnt and which I believe is still a very valid lesson for the country? Sitting in the refugee camp in Bombay, I found that it produced two classes of people. One was a class in whose blood the poison of revenge found its way and vitiated their blood for all times. There were others few in number - nevertheless, significant in their number - who like me realised that a solution of hate was love, more love and still more love. I believe that lesson is good even today for Gujarat.

Madam, I have admired the brilliant speeches that have been delivered in this House. They were brilliant by any standards of eloquence. But I only regret to say that intellectual brilliance is not the need of the hour today. What the need of the hour is not that which comes from the brain. What is needed today is that which comes from the heart. The brain calculates very carefully; the heart makes foolish sacrifices. Today, the need is for making of foolish sacrifices, but not making calculations of profit, whether political, electoral or any other kind. Madam, I want this hon. House to appreciate what India had achieved before Gujarat. We had become equal partners in a war against world terrorism. We were acknowledged as the victims of terrorism. And the entire free world, and the entire world, where democracy and the rule of law flourish, had become our partners in this struggle. Despite all provocations, we had preserved our democracy; we had preserved our rule of law and we had preserved our system of human rights and basic liberties. We were proud of the National Human Rights Commission which we had created and, even now, after the Gujarat riots, I am glad that the Chairman of the National Human Rights Commission was in London attending a Conference of all Human Rights' Organisations and he was proudly able to say that the Indian democracy and the Indian nation is alive, because there are people in this country who criticise existing regimes in power and are willing to support the cause of the oppressed, and to speak up on their points, to speak up on their behalf, and to raise their voice. It was applauded. You will hear reports about that Conference, held in London, a little later. Madam, our secularism was

acknowledged and it brilliantly shown in the firmament of nations like the beautiful Venus on a clear evening sky in India. On the other hand, what had happened to Pakistan, the cause of our major international problems and headaches? Pakistan had become almost an occupied country. Their so-called ostensible dictator and ruler had become almost a robot and had become a puppet, who was dancing on the pull of strings, which were being pulled from Washington or by the local agents of Washington located right on his back. The world saw the dictator swallowing his own vomit, and fighting Al Qaeda.and his own satanic fanatics and fundamentalists. It was a great achievement for India. But I must record that neither the debates here nor utterances outside the House applaud the achievements of the Prime Minister and his Government. I believe that the Prime Minister had achieved something which no previous Prime Minister had succeeded in achieving...

SHRI KAPIL SIBAL (Bihar) : Mr. Jethmalani, is this from the head or from the heart?

THE DEPUTY CHAIRMAN: I don't want any disturbance. .*(Interruptions)...* Please keep quiet. We are starting again...*(Interruptions)...*It is not, going on record..*(Interruptions)...*Without permission, if anybody speaks, it is not going on record.

SHRI RAM JETHMALANI: Whatever my friend, Mr. Kapil Sibal says, is in humour and in good grace and I take it in that light, but my response is that those who know my character will believe my word.

Madam, now, I come to Gujarat. Who caused the Godhra conflagration? I wish to describe those who caused that conflagration first negatively and then positively...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, I am working from my head, not from my heart and I tell you that your time is over.

SHRI RAM JETHMALANI: And that is where your heart starts.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No; my heart is not here. I have left it at home.

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, thanks for the warning. I can only cite the precedent. When the Congress Party had exhausted its time yesterday, my friend, Mr. Kapil Sibal, talked of a few minutes; you gave him 36 minutes. I require only 16 minutes...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, *...(Interruptions)..Mr.* Basu, please sit down. Please behave as you behaved in the Chair *...(Interruptions)...* So, please sit down. I will deal with it. I am capable of dealing with it..*(Interruptions)...* Please take your seat..*(Interruptions)...* Fair or unfair, I don't care. Mr. Jethmalani, I" want to tell you one thing. It was decided in the morning that three hours more would be given. And these three hours are being utilised for whichever parties' time is left. So, please don't comment. You make your speech on your own subject and according to the time allocated to 'Others'. You had only five minutes and you have exceeded it.

SHRI RAM JETHAMALANI: Madam, in my language, Sindhi, there is a proverb which means to say, "With justice, I have no claim. But I am only looking for your mercy." Please allow me to finish my speech and I will take a few minutes more. Thank you...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have to be strict because I have to get everybody's name cleared in time. So, please don't take it personal.

SHRI RAM JETHMALANI: Tell me how much more time would you give by your grace?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Two minutes.

SHRI RAM JETHMALANI: That doesn't sound very good.

THE DEPUTY CHAIRMAN: May not. It is an unpleasant job which I have taken and I have to face it.

SHRI RAM JETHMALANI: But you must realise what do the Independent Members do who do not take any party's time.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, please continue.

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, those who perpetrated Godhra were, in the first place, persons who did not relish the standing of India in the Comity of Nations. They did not appreciate the achievements of its Governments and the emasculation of their chronic enemy. They were not Muslims. Muslims don't indulge in acts which characterised Gujarat. They, certainly, were not local Muslims of Godhra. For the last two years, persistent reports have appeared in the Gujarat newspapers that there have been widespread infiltration from across the border. It may be that some misguided citizens and residents of Godhra provided some kind of hospitality, becoming the victims of propaganda and misguiding

propaganda. But it is outside elements which anticipated the aftermath, who wanted the aftermath, who hoped for the aftermath to take place so that India's reputation went down in the Comity of Nations. They were, certainly, not believers in God. They were, certainly, not those who had any respect for the religion of the Prophet of Islam.

Madam, they knew what every fool would have known, that there was going to be some tragic aftermath. That was their desire and their design to produce. But the aftermath is something which we ought to have prevented. If we had prevented it, India's reputation in the comity of nations would have risen sky-high. We would have enjoyed the respect, the honour and the dignity which India had never achieved before. I believe that there has been a failure. But, as I said, I cannot make judgments about the failure and the identity of the persons who are responsible for the failure without access to evidence. But I have one conclusive piece of evidence. The rest of the evidence is not an undisputed piece of evidence. I found that the Commissioner of Police went on television and I personally saw it he said that the forces working under him were human beings and that they were also infested with the same weaknesses, including communalism,' as the rest of the society was. Madam, this confession, which I have personally heard from the highest Police Officer, is enough, and, therefore, I am prepared to concede that there must have been instances, maybe few, maybe many, in which the law enforcement agencies must have turned their faces away and looked away in the other direction, and in some case, there must have been instances of even actual complicity in the crimes committed.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seat. I have to call Mr. Vijay Darda.

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, I don't think this is what you have done to anybody else. But I will obey your command and I will sit down, without telling the House what I want the House to do in the near future. But can I take half-a- minute?

Madam, the most important thing is that we have now to preserve the foundations of our rule of law. If the law enforcement agencies have connived with the offenders, or have failed to perform their duties, of which Kapil Sibal talked yesterday, this must be prevented, and I say that the only method of prevention is that there must be a monitoring committee, created, perhaps, by this House. I am prepared to give up all my

avocations, give up every other work in which I am involved, and I want to go and sit in Gujarat; I will personally monitor every case which comes to our attention about the dereliction of duty. I want to know how many Members of Parliament, who have made long speeches here, are willing to join me in this work. For the rest of the solutions, as they say in America, give them to the Press.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Vijay Darda.

श्री विजय जे.दर्डा (महाराष्ट्र) : मैडम, जब आप घंटी बजाएगी तब मैं बैठ जाऊंगा।

उपसभापति : मैं अभी बजा देती हूं।

श्री विजय जे.दर्डा : उपसभापति महोदया, मैं सदन का अधिक समय नहीं लूंगा और सीधी अपनी बात कहूंगा तथा मैं और सीधी बात कहूंगा तथा मैं और समय बरबाद नहीं करना चाहता। मोदी सरकार को फौरन बर्खास्त करके पूरे गुजरात को सेना के हवाले कर देना चाहिए। पिछली 27 फरवरी से गुजरात जल रहा है, सरेआम कत्लेआम हो रहा है तथा वह रूकने का नाम नहीं ले रहा है और इंसान इंसान के खून का प्यासा है। हमारी सारी सभ्यता, प्रेम, शांति, प्यार, भाईचारा सबकुछ दफना दिया गया है। एक भाई दूसरे भाई को मार रहा है, माताओं और बहनों पर अत्याचार हो रहें हैं।....(व्यवधान)...

श्री बचानी लेखराज (गुजरात) : क्या आप गुजरात होकर आयें हैं?

श्री विजय जे.दर्डा : हां, मै गुजरात होकर आया हूं।

उपसभापति : अभी आप इनको बोलने दीजिए।

SHRI BACHANI LEKHRAJ: Madam, I am inviting him to come to Gujarat.

THE DEPUTY CHAIRMAN: You can extend invitation to him in the Lobby, not now. You can call him outside. *...(Interruptions)...*

श्री विजय जे. दर्डा : यह आपका सही परिचय है। मैं तो नया हूं मगर आपका सहीं परिचय लालू प्रसाद यादव जी ने करवाया था। मोदी सरकार को हटाने के बारे में लगातार बात हो रही है। हम मादी सरकार को इसलिए नहीं हटाना चाहते है कि वह एक अच्छी सरकार है या वह आपोजिशन की सरकार है। मोदी सरकार को इसलिए हटाना चाहते हैं कि वह अपना धर्म पालन करने में नाकामयाब रही है। मै तो यूं कहूंगा कि वहां पर जो घटनाएं हो रही है उसमें उनका हाथ है। अगर ऐसा नहीं होता तो प्रधान मंत्री जी के कहने के बाद में वहां पर हो रही घटनाएं रूक जाती है। मुझे मालुम नहीं कि प्रधान मंत्री जी कि क्या बेबसी है कि वे उनको रोक नहीं पा रहे है। सारा दोष लोगो को दिया जा रहा है। मेरे ख्याल से कारगिल से भी ज्यादा भयंकर यह उनकी इंटलीजेंस का फैल्योर हैं। जो कुछ गोधरा में हुआ है वह बहुत बूरा हुआ है, कोई इसकी सरहाना नहीं कर सकता है। अगर उसको रोकने के लिए उनके पास में गवर्नेस होता, तो वे उसे रोक सकते थे। बिना जाने, बिना सोचे, बिना समझे हमारे देश को बदनाम करने की

वैसे ही साजिश हो रही है। हमारे पडौसी आईएसआई के लोग वहां पर एक्टिव हैं और इसके बावजूद भी बिना सोचे-समझे हम अपने भाईयो का सरेआम कत्ल कर रहे हैं। क्या यह देश उनका नहीं है? क्या वे हमारे नहीं है? देवी देवताओ के नाम पर यह जो कत्लेआम हो रहा है, वीएचपी, आरएसएस, बजंरग दल क्या इनको प्रोटेक्शन नहीं दिया जा रहा है? मोदी जी तो यहां तक बढ़ गये है कि जब तक पार्लियामेंट चलेगी तब तक गुजरात में शांति बहाल नही हो सकती है। It is a mockery of democracy. इसके लिए उन दोनो सदनो के बीच में लाकर पनिश करना चाहिए।...(समय की घंटी) ...अगर आप कहते है कि वहां पर शांति हो तो इसके लिए विश्वास का वातावरण बनना चाहिए। अगर विश्वास का वातावरण बनाना है तो जब तक मोदी जी वहां पर रहेंगे तब तक ऐसा नहीं हो सकता है।....(व्यवधान)....

SHRI S.S. AHLUWALIA (Jharkhand) : I am on a point of order. Can we name a person who is not present in the House and who cannot plead his case in the House? Can we name him repeatedly in the House? Not only that, What is this? *...(Interruptions)...*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will give my ruling..*(Interruptions)...*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Mr. Kamendu Bhattacharjee, Mr. Vijay Darda does not need an advocate like you to plead his case. *...(Interruptions)..*.* मेरा कहना है कि विजय दर्डा विद्वान हो सकते है किन्तु विद्वता का इस तरह से फायदा नहीं उठाया जाना चाहिए।....(व्यवधान)....

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will give my ruling. Mr. Darda, we have been discussing about Gujarat and everybody, since yesterday, has been taking the name of Mr. Modi, the Chief Minister of Gujarat, and nobody objected. As long as you refer to the Chief Minister, it is okay, but don't bring his parents into it, because it is not fair. That will not go on record.

श्री विजय जे. दर्डा :*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Whatever you say, but don't bring in his parents' name. *...(Interruptions)...* : अभी आप चुपचाप रहिए, मैंने रूलिंग दे दी हैं, बात खत्म हो गयी। This is my second bell; please wind up.

SHRI VIJAY J. DARDA: Madam, since I am a disciplined person...

THE DEPUTY CHAIRMAN: You wind up in one minute.

---

* Not Recorded.

SHRI VIJAY J. DARDA: You will respect my feelings and give me a little more time. Before I wind up, मैं यह आपके सामने रखना चाहता हूं कि ह्यूमैन राइट कमीशन ने भी मोदी जी के रैजीग्नेशन की बात की थी।

श्री एस.एस. अहलूवालिया : अब यह ह्यूमैन राइट्स कमीशन की कौन सी रिपोर्ट कोट कर रहे है, कहां लिखा है, कौन सी रिपोर्ट है?

एक माननीय सदस्य : वह अपने आप बात कर रहे हैं।....(व्यवधान)....

श्री विजय जे.दर्डा : सिंहल साहब, मैंने आपकी आवाज सुनी नहीं अभी तक।....(व्यवधान)...

श्री एस.एस. आहलूवालिया : पढिए, मांगकर पढ़ लीजिए, आपके नेता बैठे है, उनसे ले लीजिए। अपनी मर्जी से कुछ भी पढ देते है और ह्यूमैन राइट्स कमीशन के नाम पर बोल देते हैं।

श्री विजय जे.दर्डा : मैडम, मैं एक बात ही कहना चाहता हूं, यह खेल ये लोग बंद करें। यह बंद करिए। आदमी को तोडिए नहीं।

जल संसाधन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती विजया चक्रवर्ती) : मैडम..(व्यवधान)..

श्री विजय जे.दर्डा: बहन जी, आपने क्या कहा, मुझे सुनाई नहीं दिया।...(व्यवधान)...

SHRI MANOJ BHATTACHARJEE (West Bengal) : She is not a Member of this House and she can't speak here.

THE DEPUTY CHAIRMAN: She is a Minister and she can speak. Ministers have been speaking in this House. Whether one is a Member of Parliament or a Minister, nobody should interrupt. Mr. Darda, please wind up.

श्री विजय जे.दर्डा : मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि :

कबीरा बावडी एक है, पनिहारी अनेक,

बर्तन भी अनेक लेकिन सबमें पानी एक ॥

और मैं चाहूंगा, मेरी आपसे हाथ जोड़कर विनती है कि आग में तेल मत डलिए, बहुत सुलग चुकी है, बहुत आग लगा चुके हो।

श्री कृपाल परमार (हिमाचल प्रदेश) : आप अपनी बावडी का पानी ले आइए।....(व्यवधान)...

श्री विजय जे.दर्डा : मेरी बावडी का पानी लाउंगा तो आप डूब जाओगे इसालिए मेरी बावडी की तरफ आप नहीं देखिए और जो आग लग रही है , उसको बुझाओ । इतना ही मैं कहना चाहता हूं , मै आपको मशवरा तो दे नहीं सकता, ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपको सदबुद्धि दे ।

SHRI B.J. PANDA (Orissa) : Madam Deputy Chairman, I thank you for giving me this opportunity to express deep anguish on behalf of my party and on behalf of the people of Orissa for what has been happening in Gujarat for the last two months. I will stay within the time-limit that has been allotted to me, because I can't contribute to this debate by the quantity of my submission, nor can I express as heartfelt feelings, as have been expressed by many Members of this august House, for instance, by Shri Ahmed Patel from Gujarat and by Shri Ram Jethmalani, who has spent time in the refugee camps.

But I can say that the incidents in Gujarat have become a national shame, not just in the eyes of the Prime Minister, but the eyes of everybody involved in the NDA Government, of every citizen of this country. Certainly, I speak for the citizens of Orissa. When I talk about the incidents of Gujarat, we speak of all the incidents in Gujarat. What happened at Godhra should never be forgotten when we talk about the continuing violence that is going on in Gujarat even till now. What had happened at Godhra was despicable. Who was responsible for Godhra? Certainly, not the innocent men, women and children who have been slaughtered thereafter in Gujarat. This lawlessness that has taken over, this regular and repeated mobocracy which has overwhelmed the police and the authorities - I say overwhelmed, Madam — I do not point finger because enough fingers have been pointed. But this is bad enough that this mobocracy has overwhelmed the system in Gujarat repeatedly and it continues to happen. I, therefore, endorse all the suggestions that have been made for the Centre to effectively intervene. Since, we have limited time, I would like to touch only one more aspect which has been debated here in this august House and which has been debated everywhere else, including the media - the role of the media itself. A lot of allegations have been made about the media provoking the situation, about the media pouring oil, fanning flames of the situation. Madam, I would like to put forward that, yes, we have seen very gruesome sights particularly on the electronic media, very graphic sights of what has been happening in Gujarat. But what we must understand is that this is not a production from Bollywood. This is a real life and this is happening. When we criticise the media for showing these things, we must understand what exactly we are saying. Are we accusing them of bias or only sensationalism? If it is only sensationalism that we are talking about, perhaps, there is some merit in what we say. But what do we do about it? But trying to curb sensationalism is tantamount to bringing in censorship to the media. If there are provable cases of bias by the media, certainly, we

should take action. But trying to curb sensationalism in the media has never worked. It would not work now. It would not work ever in any democracy. I would also to say that the electronic media in a highly competitive form is still new to this country. It is only about ten-year-old that we have alternative electronic media in our homes from the sky. This sort of imagery may be new to this country but the world has seen it. The world has seen it for 30 or 40 yers ago it Vietnam,, the world has seen it in Afghanistan and world has seen it in the Gulf War. When we criticise the media, we must also keep in mind that the media is considered to be the fourth pillar of democracy. Who well have the other pillars acquitted themselves? ... *(Interruptions)...* I endorse that criticism. I said, wherever there are provable cases of bias, I endorse that strict action must be taken. What I am saying is that there is a distinction between bias and sensationalism. That is the distinction that I am trying to make. When we criticise a column of democracy, we must examine how well the other columns have acquitted themselves. How well have we acquitted ourselves? I was touched and I must say that I was honoured to be a Member of this House, when I heard a new Member today, pointing out this fact, and, in fact, taking an oath that in his six years' term, he would never shout, never interrupt and never rush into the well of the House.

I wish more of us would take such an oath and more of us would commit to acquit ourselves, the legislative pillar of democracy, to do our duty, to do justice, before we start commenting on other pillars. Thank you.

SHRI G.K. VASAN (TAMIL NADU): Thank you, Madam. I am proud to be a Member of this august House. I would like to mention that my party's founder leader, late Shri G.K. Moopanar, till his last breath, stood for secularism. Senior leaders in this House have given enough details about the happenings in Gujarat. I do not want to go into the details and in-depth on the matter and add fuel to the fire. Whatever has happened in Gujarat is not only saddenming, but also terrorising the country. I feel we are loosing the moral ground of democracy and secularism in the country. Our land is known for secularism and not for communalism. Peace should be achieved with harmony and with the help of all the religions. I appeal to the Central Government and all the State Governments irrespective of the religion or caste, should be covered under the welfare scheme and the scheme should reach every person. The Central Government and the State Govemrnent should be fully responsible for the happenings in Gujarat. They should be aware that they are answerable to the people of the nation at the time of

elections. The people will decide the mandate of the country. They should be well aware of it. We, generally, say that better late than never. In that way, without further delay, I would seek the resignation of the Chief Minister of Gujarat to give confidence to the people of the nation. Please do not talk about the past and give way for communalism. Honestly, we should try to eradicate the dangerous enemy for communal harmony and peace. I would request the senior leaders of our country and the parliamentarians that let us take the issue above party lines, assure the poor and hard hit people of Gujarat, who have lost their lost status on their own land, and give them confidence to regain their lost status back in their own land and see that peace and brotherhood are maintained. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, Mr. Ramoowalia -- absent; Shri Kartar Singh Duggal -- absent; Dr. Raja Ramanna -- absent. We have got six speakers from the Congress Party and three speakers from the BJP.

There are forty-five minutes for the Congress Party, thirty-six minutes for the BJP and six minutes for the S.P. This is the only time left for the House. I would like the Whips of various parties to decide who will speak, for how much, from their own time. Now, Shri Suresh Pachouri.

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : आदरणीय उपसभापति महोदय, माननीय सदस्य श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा गुजरात में हो रहे नरंसहार के संदर्भ मे जो प्रस्ताव रखा गया है मै उसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

महोदय, इस माननीय सदन में ऐसे अवसर बिरले ही आते हैं कि जब किसी प्रस्ताव पर चर्चा हो और उस प्रस्ताव में सत्ता पक्ष और विपक्ष , दोनों ही सहमति दें।

और वैसी ही बात आज जिस प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है उस पर लागू होती है ।यह तीसरा अवसर है इस राज्य सभा के संसदीय इतिहास में । मेरी जानकारी के हिसाब से 24 मार्च 1970 को जब गुजरात में अर्थक्वेक आया था उस समय यंहा इसी प्रकार रुल 170 के तहत प्रस्ताव पर दोनों पक्षों के लोगों ने सहमति जाहिर करते हुए चर्चा की थी । दूसरा वक्त 24 मार्च 1983 को आया जब नॉन-एलाइंड कांफ्रेस हुई थी उसमें सभी ने एकमत होकर रुल 170 के तहत चर्चा की थी तब सहमति प्रदान की थी वैसा ही वोटिग का प्रोजिवन जब प्राइवेट मैंबर्ज बिल में रहता है तो चार मर्तबा इस सदन में ऐसे मौके आए कि सभी लोगों ने सहमति प्रदान की और वैसा ही प्राइवेट मैंबर रेजोल्यूशान में 12 बार ऐसा अवसर आया। इस सब के पीछे कारण क्या है ? इस सब के पिछे मैं ऐसा सोचता हूं कि गुजरात में जो निरंतर नरसंहार हो रहा है वहां अभी तक शांति की बहाली नहीं हो पा रही है और सब को इस मामले की चिंता है कि वहां जब इनंर्टल डिस्टर्बेस का मामला है तो आर्टीकल 355 के तहत सैन्ट्रल गवर्नमेंट को इंटरवीन करना चाहिए। वहां दंगों का कहर रूक नहीं पाया है। एक धारणा यह बन गई है कि वहां जो सांप्रदायिक दंगे हो रहे हैं उसमें प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से वहां के शासन और प्रशासन का हाथ है, तो उसके प्रति चिंता इस सदन के सभी माननीय सदस्य वयक्त कर रहे हैं। महोदया, मैं उन बातों को नहीं

दोहराऊंगा जो कि इस सदन में बोली जा चुकी हैं लेकिन जो गोधरा में वीभत्स हत्याकांड हुआ वह ऐसा था जिसने हमारी मनावता को झकझोर दिया है। उसकी जितनी निंदा की जाएं, वह कम है। और उसके बाद पूरे गुजरात में जो सांप्रदायिक हिंसा भड़की उसकी भी जितनी निंदा की जाए वह कम है। प्रश्न निंदा का नहीं है आज प्रश्न कुछ कार्यवाही करने का है, कुछ कदम उठाने का है। यह बताया गया कि गुजरात में जो स्थिति है उसके मूल में गोधरा है। महोदया, मैं उद्धृत करना चाहूंगा एनडीटीवी पर आज भी जो न्यूज आइटम आया है, उसमेंयह उल्लेख किया गया है, क्योंकि माननीय गृह मंत्री जी ने और गुजरात के मुख्य मंत्री जी ने यह कहां कि Gujarat incident was a pre-planned theory लेकिन उसमें आज यह कहा गया कि,

> "The investigating officials have not confirmed that they have found no evidence, so far, of any wider conspiracy, based on documents and interviews with the key officials involved in the investigation."

इससे आगे, जो डीआईजी सीआईडी क्राइम हैं श्री राकेश अस्थाना,, He also confirmed that there was no evidence, so far, of any larger conspiracy.

महोदया, यह जो इन्वेस्टीगेटिंग आफिसर्ज़ का वर्शन है, यह उसके प्रत्युत्तर में है जो माननीय गृह मंत्री जी ने और गुजरात के मुख्य मंत्री जी ने कहा कि एक प्री-प्लांड स्ट्रेटजी थी। तब जो बात आती है कि इस देश के माननीय प्रधान मंत्री जी यह कहे कि गुजरात की सांप्रदायिक हिंसा के मूल में गोधरा है, मैं भी कहता हूं कि गोधरा की वीभत्स घटना की जितनी निंदा की जाए वह कम है, लेकिन उस गोधरा के मूल में क्या है इस पर आज जाने की आवश्यकता है। गोधरा के बाद जो स्थिति निर्मित हुई, जो सांप्रदायिक हिंसा भड़की, और आज सारे सदन के लोग एकमत हो कर यह सोंचे कि वहां की सांप्रदायिक हिंसा पर कैसे काबू पाया जाए, गुजरात के जो सांप्रदायिक हिंसा है उसमें किन संप्रदाय के लोगो की हत्या हो रही है। आज प्रश्न यह है कि नरसंहार की स्थिति पर काबू पाने के लिए गुजरात सरकार कोई कारगर कदम उठा रही है या नहीं।

हमारे प्रधान मंत्री जी ने रिलीफ एंड रिहैबिलिटेशन के नाम पर पैसा देने की घोषणा की, लेकिन अभी तक क्या हुआ है और आगे क्या करने की योजना है, यह स्पष्ट नहीं है। महोदया, गुजरात में हुए नरसंहार का वर्णन मैं बाद में कंरूगां, लेकिन उस से सभी लोग विचलित हुएं हैं- चाहे वह नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन हो या मायनोरिटी कमीशन हो। अंतराष्ट्रीय जगत में भी इस की निंदा हुई है और अंतराष्ट्रीय जगत ने इस की निंदा इसलिए की है क्योंकि यह आभास होने लगा कि गुजरात की सरकार पर लोगों को अब शंका है। लोगों का उस से विश्वास उठ गया है और लोगों को यह लगने लगा है कि दंगाइयों को प्रशासन और शासन का संरक्षण प्राप्त है। इस बारे में कई व्यंगकारों ने कार्टून भी बनाए हैं। महोदया, अगर यहां मैं यह शेर कहूं तो उपयुक्त ही होगा कि,

शहरे वफा जो कल थी, मकतल बना हुआ है,
खुशबू की सरजमीं पर क्या गुल खिला हुआ है।
आती है खून की बू हर दिशा, हर डगर से,
इंसानियत का लाशा हर तरफ पड़ा हुआ है।

महोदया, बात कही जाती है कि दो-चार जगह ही दंगे हो रहे है। महोदया, वजीरे कानून ने कल बताया कि इतने लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया है और इतने लोगों को प्रिवेंटिव मेजर्स अपनाते हूए अरेस्ट किया गया है। वह इस बात की पुष्टि करता है कि वहां के हालात बद से बदतर होते जा रहे है। महोदया, वहां के मुख्य मंत्री कहतें है कि 72 घंटे में हम ने स्थिति पर काबू पा लिया है । मैं बताना चाहता हूं कि 72 घंटे के बाद क्या स्थिति हुई है। सरकारी आंकडे यह बताते हैं कि पहले वीक में 558 लोगों की मौतें हुई, तीसरे वीक मार्च 15 से 22 मार्च तक 30 लोग मारे गए, गोधरा कांड के बाद पांचवे हफ्ते में 58 लोग मौत के शिकर हो गए। यह तो स्थिति है 72 घंटें के बाद की और यहां तक कि जब उस सदन में चर्चा हो रही थी तो 5 लोगों की हत्या कर दी गयी व शांति मार्च जब हो रहा था तब भी वहां पायलेंस हो गयी। महोदया, मैं बताना चाहता हूं कि इस के मूल कारण में क्या है। इस का सब से बड़ा कारण यह हे कि जब अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका और कर्त्तव्य का निर्वहन कोई शासन करता है और जब उस शासन से लोगों का विश्वास उठ जाया करता है तो यही स्थिति होती है। जिन हाथों में लोगों की रक्षा की बागडोर है ,जब वे गैर-जिम्मेदार हों तो यह स्थिति हो जाया करती है । महोदय,मेरे हाथ में 19 अप्रैल, 2002 का दैनिक भास्कर सामाचार-पत्र है जिस में प्रसिद्व लेखक कमलेश्वर ने गुजरात के मामले में लिखा है कि यही नाजीवाद का असली चेहरा है। इस में उन्होंने गृह मंत्री के बारे में आगे लिखा है कि गुजरात में चल रहे नरमेघ पर भारत के साथ दुनिया के देशों ने सवाल उठाया तो रा0ज0ग0 के भा0ज0पाई0 गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने दो टूक शब्दों में कहा कि केन्द्र के गठबंधन में शमिल भारतीय जनता पार्टी का एजेंडा अलग है। वह भारतीय जनता पार्टी का असली एजेंडा है। यहां गठबंधन के कारण वह केन्द्र में छटा सेकुलरावादी बने हुए हैं, लेकिन गुजरात में साप्रादयिंकता में बने रहने का उन का अधिकार है और यही नाजीवाद का असली चेहरा है। महोदया, मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं क्योंकि आज स्थिति यह है कि गुजरात के मुख्य मंत्री भारतीय जनता पार्टी के प्रतीक बन गए हैं। महोदय, ये तो सुना है शेर जब हिलता है तो दुम भी हिलती है, लेकिन यह कभी नहीं सुना था कि जब दुम हिलती है तो शेर हिलता है। महोदय, एक कहावत और भी है कि जब बिल्ली के भरोसे दूध की रक्षा छोड़ दी जाए तो वह दूध को पी जाया करती है। आज वहीं स्थिति गुजरात की हो रही है।

महोदया, मैं नरेन्द्र मोदी की पृष्ठभूमि में नहीं जाना चाहता कि उन की पृष्ठभूमि में आर0एस0एस0 का क्या संबंध है, लेकिन उन का जो चरित्र है, चेहरा है और जो चाल-चलन है, वह इस बात की पुष्टि करता है जो आज गुजरात में हो रहा है। महोदया,मैं ने आदरणीय गृह मंत्री के हवाले से कुछ वक्तव्यों की बात की और मुझे लगाता है कि गैर-जिम्मेदाराना वक्तव्य दिए जाते है तो यही स्थिति होती है। कहा जाता है,"राजा कालस्य कारणम्" और जब राजा गैर-जिम्मेदाराना वक्तव्य देता है तो यही स्थिति पैदा होती है।

गृह मंत्री एक जिम्मेदार पद पर बैठे हुए है और वह जब यह कहें कि अयोध्या के मूवमेंट की वजह से हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी संख्या इतनी बढ़ी है, पहले हम दो थे और दो से इतने हुए है, तो यह अपने आपमें बहुत चेताने वाली बात हुआ करती है। तब लगता है कि भारतीय जनता पार्टी का एजेण्डा क्या है। जब भारतीय जनता पार्टी की सब जगह दुर्गति होती जा रही है, भारतीय जनता पार्टी का ग्राफ गिरता जा रहा है और कांग्रेस का ग्राफ बढ़ता जा रहा है तब वोटो की खातिर यह सब किया जाए तो मैं सोचता हूं कि इससे

हल्केपन की राजनीति कोई नहीं हुआ करती। इस चीज को गुजरात के मुख्य मंत्री ने स्वीकारा है।वोटों के ध्रुवीकरण की बात को लेकर 15 मार्च, 2002 के इंडियन एक्सप्रेस में जो छपा है, वहां मैं यहां उद्धृत करना चाहता हूं -"Talking about the future electoral impact of the communal carnage, the Chief Minister said, "the Party leadership can certainly translate this Hindu backlash into vote, in case it decides to go for elections."

उपसभापति महोदया, इससे ज्यादा गैर-जिम्मेदाराना वक्तव्य और कोई हो सकता है? और भी ऐसे बहुत गैर-जिम्मेदाराना वक्तव्य हैं। जब इस देश का गृह मंत्री यह कहे कि वहां जो पुलिस ने एक्शन लिया उससे वह सेटिसफाई हैं, जब इस देश का एक मुख्यमंत्री यह कहे कि पुलिस ने जो एक्शन लियाप उससे वह सेटिसफाई हैं और दूसरी तरफ पुलिस कमीशनर, मिस्टर पांडे, यह कहे कि पुलिस की कुछ संवेदनाएं हुआ करती है, भावनाएं हुआ करती है तो उससे ज्यादा गैर-जिम्मेदाराना वक्तव्य और कुछ नहीं हुआ करता। मै उसकी कॉपी भी लाया हूं, लेकिन समय की बचत की वजह से उन सारी बातों को उद्धृत नहीं करना चाहता।

उपसभापति महोदया, यह कहा गया कि स्टुडेंटस ने जो एग्जाम नहीं दिया, उसके लिए कुछ कांग्रेस के लोग जिम्मेदार हैं। कांग्रेस के लोग भी किसी न किसी स्टुडेंट के पैरेण्टस हुआ करते है। वहां पैरण्टेस की मीटिंग हुई, जो दंसवी और बारहवीं क्लास के बच्चो के एग्जामिनेशन के सिलसिले में बुलाई गई थी। उसमें वह लोग भी उतने ही चिंतित थे, जितने दूसरे पैरण्टस हुआ करते है। उन्होंने यह शर्त रखी कि छात्रों की सुरक्षा का इंतजाम किया जाए वरना तनावपूर्ण वातावरण में बच्चे एग्जाम न दें और माइनोरिटी कम्युनिटी के छात्रों का ज्यादा ध्यान रखा जाए। यह एक बहुत गौर करने की बात है। इसलिए इस पर मै बाद में आऊंगा, लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि जो गुजरात से संबधित आंकड़े हैं, वह अपने आप में चौकने वाले आंकड़े है। माननीय वजीरे कानून ने बहुत कुछ बातें कही, लेकिन गुजरात की स्थिति यह है कि वहां अनआफिसियल डैथ तीन हजार से ऊपर है, आफिसियल डैथ नौ सौ से ऊपर बताई गई हैं और जो इन्सोरेन्स क्लेम किए गए हैं वह 4564 हैं, जिनमें मात्र तीन केसेज में एमाउण्ट दिया गया है। यह गुजरात की स्थिति है।

महोदया, बात आती है कि वहां की पुलिस का क्या रोल है। वहां की पुलिस ने जो सर्कुलर निकाला है, वह भी अपने आप में चौकाने वाला है। मैं उस सर्कुलर की भी कापी लाया हूं। उसमें यह बात आई थी कि बताया जाए कि माइनोरिटी कम्युनिटी के लोग किन किन स्थानों में रहते हैं, उनके बारे में पूरी जानकारी दी जाए। मैं उस सर्कुलर को उद्धत करना चाहूंगा। यह सारी बातें हैं, जो गुजरात के मामले में बहुत कुछ सवालिया निशान लगाती हैं।

महोदया, यह बात कही जाती है कि भारतीय जनता पार्टी वहां पर बहुमत में है और इसलिए वहां के मुख्य मंत्री का फैसला किसी ओर को करने का अधिकार नहीं हैं। बात ठीक हैं लेकिन जो बहुमत में है, वह राजतंत्र चलाएंगे, वह शासन-तंत्र चलाएंगे, लेकिन शासन-तंत्र और राजतंत्र भी संविधान की मर्यादा के अंतर्गत चला करते हैं। संविधान के आर्टिकल 355 में जो व्यवस्था की गई है, उसके तहत जब शासन नहीं चल पाता, तो मैं सोचता हूं कि सेंट्रल गवर्नमेंट का यह दयित्व हो जाता है कि वह उसमें हस्तक्षेप करे। इन्ही भाषा और भाव के साथ माननीय अर्जुन सिंह जी ने जो प्रस्ताव यहां रखा है, उसका हम समर्थन करने के लिए खड़े हुए है।

महोदया, यह बात कही जाती है कि गुजरात में अखिर ऐसा क्यों हो रहा है? यह बहुत स्पष्ट है कि गुजरात जो है सांप्रदायिकता की प्रयोगशाला बन गई है। गुजरात को आधार बना कर यह लोग आगे की राजनीति की रणनीति करना चाहते हैं। जो यह बात आती है कि आखिर गोधरा में यह क्यों हुआ? गोधरा में जो हूआ, मैं खुद कहता हूं कि दुर्भाग्यजनक था, लेकिन उससे पहले अयोध्या जा रहे और अयोध्या से आ रहे जो कारसेवको ने लूटपाट की, उसकी रिपोर्ट हुई, उस पर समय पर कार्यवाही नहीं हुई। गोधरा एक सेन्सटिव जगह है। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि गोधरा से लगा हुआ मध्य प्रदेश का रतलाम जिला है। मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री सचेंत थे इसलिए वहां साप्रंदायिक हिंसा नहीं हो पाई लेकिन गुजरात के मुख्य मंत्री के पास पूर्व सूचना थी परन्तु वे अपने बाई इलेक्शन में बिजी थे या कोई और वजह थी, वोटो के ध्रुवीकरण का मामला था, जिसकी वजह से वे कोई एक्शन नहीं ले पाए और जो उनके पास सूचना आती रही, उस पर उन्होंने कोई कार्यवाही नहीं की़ गुजरात की और उसके बाद की घटना पर एक कमीशन बनाने की बात कही गई है, मैं माननीय गृह मंत्री से विनम्रतापूर्वक यह जानना चाहता हूं कि जिन माननीय रिटायर्ड न्यायाधीश को यह जिम्मेदारी दी गई है,क्या उनके बारे में माइनॉरिटीज के मन में तरह तरह की शंकाएं नहीं है? ऐसा क्या पहले बातें नहीं आई हैं, वह यदि आई है तो इस बात का क्या औचित्य है कि अल्पसंख्यको से संबधित जिस कमीशन ऑफ इंक्वायरी की जिम्मेदारी उन्हें दी गई है, वे उसके तहत कुछ कार्यवाही कर पाएगे? गुजरात में क्या हो रहा है, मैं उन फोटोज का जिक्र नहीं करना चाहूंगा लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि ऐसी वीभत्स घटनांए कभी देश के किसी कौने में नहीं हूई, जो अभी वहां हुई। प्रश्न आता है कि गैर जिम्मेदाराना वक्तव्य क्यों दिए जा रहे है। हमारे प्रधान मंत्री जी के वक्तव्यों का भी जिक्र करना चाहूंगा। एक तरफ गोधरा के बाद जब वे 4 अप्रैल को वहां जाते है तो यह कहते है कि पता नहीं इतना सब होने के बाद मैं क्या मुह लेकर विदेश जाऊंगा, गुजरात के मुख्य मंत्री को राजधर्म का पालन कराना चाहते हैं? हमारे यहां कहां गया है,मैं राजधर्म का मर्म जो रामचरित मानस के अयोध्या कांड में लिखा गया है, उसका जिक्र करना चाहूंगा। उसमें यह हैः-

मुखिया मुख सो चाहिए खान-पान कहुं एक,
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक
राजधर्म सरबसु एतनोई, जिपि मन मोह मनोरथ होई ।।

इसका तात्पर्य यह है कि मुखिया को मुख के समान होना चाहिए, जो खाने-पीने में तो एक है परन्तु विवेकपूर्ण ढंग से सबका पालन-पोषण किया करता है। यहां तक कि रावण राज में भी जब लक्ष्मण जी को श्री राम जी ने भेजा था कि रावण से जाकर नीति-शास्त्र सीखो तो उसने यह कहा था कि प्रजा किसी भी जाति की हो, उसको समान दृष्टि से देखना चाहिए। इसलिए साम्प्रदायिक चश्मे से देखने वाले इस मुख्य मंत्री को, जो कुछ गुजरात में हो रहा है उस स्थिति में गुजरात के मुख्य मंत्री के पद पर बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं रह जाता है। मैं यह कहना चाहूंगा कि बात यह होती है कि लोग केवल क्रिटिसाइज़ करते जा रहे है, आवश्यक कदम क्या उठाएं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: If you are taking the time of your party, then I am not responsible for it.

AN HON. MEMBER: It is okay, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If it is okay, then you withdraw your narrie.

श्री सुरेश पचौरी : महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह गुजारिश करना चाह रहा हूं कि आज आवश्यकता इस बात की है गुजरात में शांति की बहाली हो, आज आवश्यकता इस बात की है कि गुजरात में इंसानियत का माहौल पैदा किया जाए, आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रधान मंत्री हो या गृह मंत्री हो, वे तरह तरह के बदले हुए वक्तव्य न दें। अब यह बात होती है कि प्रधान मंत्री जी और गृह मंत्री जी ने क्या पहले भी इस संबंध में कुछ इस प्रकार के वक्तव्य दिए हैं, तो मुझे याद आ रहा है कि प्रधान मंत्री जी ने गोवा में जो कुछ कहा हमारे यहां की मुस्लिम जाति के बारे में, उसका जिक्र करना चाहूंगाः-

आजकल जिस इस्लाम को लेकर मिलिटेंसी अपनाई जा रही है, उसमें सहिष्णुता के लिए कोई स्थान नहीं है, वह जेहाद के नारे पर चलता है, सारी दुनिया को अपने ढांचे में ढालने का सपना देखता है।

इसके बाद जो भिवंडी में रायट्स हुए, उस सिलसिले में माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो कहा वह 15 मई, 1970 को समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ, उसको मै उद्धृत करना चाहूंगा :-

हमारे मुस्लिम बंधु अधिकाधिक साम्प्रदायिक होते जा रहे है, मगर इस देश में अब हिन्दू मारं नहीं खाएंगे, 700-800 साल तक मार खाने की परम्परा थी।

इसी प्रकार 9 अगस्त, 1984 को माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी से संबधित जो समाचार आया है उसमें यह कहा गया किः- महाराष्ट्र में जो भिवंडी रायट्स हुआ उसके लिए वहां के मुख्य मंत्री का नैतिक अधिकार नहीं बनता है कि वे अपने पद पर बनें रहें। मैं यह जानना चाहता हूं कि गुजरात के मामले में इन्हीं प्रधान मंत्री के द्वारा अलग मापदंड क्यों अपनाया जा रहा है? हमारे गृह मंत्री जी का गुजरात में जो निर्वाचन क्षेत्र है, उसमें लगातार हिंसा होती जा रही है। वहां जो गुलबर्ग कालोनी है, वहां हिसा हुई है। वहां वक्फ बोर्ड का आफिस है, माइनरिटीज कमीशन का जो सेक्रेटेरिएट में आफिस है, वह माननीय गृह मंत्री जी के क्षेत्र में आता है और उसकी रक्षा नहीं कर पाए। और तो और पहले 2 घंटे में 64 लोगों की हत्या हुई। मैं किसी जाति की बात नहीं कर रहा हूं, इन 64 लोगों में से जो 40 लोग माननीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी के गांधीनगर निर्वाचन क्षेत्र में पुलिस फॉयरिंग से मारे गए, वे माईनॉरिटी कम्युनिटी के लोग थे। आज सवाल इस बात का है कि क्या इस गृह मंत्री से यह अपेक्षा की जाए कि वह आर्टिकल 355 का पालन करेगा जिसके बारे में माननीय नेता सदन ने सहमति प्रदान की है। हमें इस बात पर शक होता है। भिवंडी के दंगो के मामले में मुसलमानों के बारे में जिनकी राय ऐसी थी, क्या उस प्रधानमंत्री से अपेक्षा की जाए? बाद में गोवा में जो भारतीय जनता पार्टी का सम्मेलन हुआ, उसमें उनका मुखौटा उजागर हो गया। वे गुजरात के संबंध में कोई कदम उठाएंगे, हमें ऐसी कोई उम्मीद नहीं हैं।

महोदया, हम यह कहना चाहते है कि आज आवश्यकता इस बात की है कि यह सदन जब एकमत से इस प्रस्ताव पर विचार कर रहा है तो यह एक स्वर से कहे कि गुजरात के मुख्य मंत्री को अपने पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। भारतीय जनता पार्टी ने उनको

क्लीन चिट दे दी है। भारतीय जनता पार्टी का गोआ का सम्मेलन गुजरात के मुख्य मंत्री को क्लीन चिट देता है और वह इस तरह गुजरात वापस आ जाते है जैसे कोई विजयोत्सव हो और उसके बाद जो मारकाट होती है, मैं उसका हवाला नहीं देना चाहता हूं।

अब मैं गृह मंत्री के बारे में बात करना चाहता हूं कि गृह मंत्री जी की मंशा क्या रही है। मैं जो भी कह रहा हूं पूरे दावे और ऑथेंटिसिटी के साथ कह रहा हूं। महोदया, यह एन.डी.टी.वी. की न्यूज है 13 जून,2001 की जिसको मैं यहां उद्धृत करना चाहता हूं- उसका शीर्षक है-"Advani Firm About Controversial Ayodhya Statement". उसमें आगे लिखा है कि :

"L.K. Advani reiterated that the happiest day in his life was when the *Kar Sevaks* first entered the Babri Masjid. Mr. Advani further said that since the movement was at Ayodhya, when he heard that *Kar Sevaks* had broken all the barriers and performed *Kar Seva*, it was one of the happiest days for him."

महोदया, इस देश के गृह मंत्री की जब यह मंशा रही हो, इस देश के प्रधानमंत्री का हिन्दुस्तान के मुसलमानों के बारें में यह मंतव्य रहा हो, इस देश के एक राज्य गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जब भारतीय जनता पार्टी के प्रतीक बनकर रहे तो यह लगता है कि अब भारतीय जनता पार्टी के प्रतीक प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी नहीं है बल्कि भारतीय जनता पार्टी के प्रतीक श्री नरेन्द्र मोदी हैं। इसलिए वे सांप्रदायिकता की प्रयोगशाला गुजरात में खोलना चाहते हैं और उस एक्सपेरिमेंट को जारी रखना चाहते है। इसीलिए मैंने यह कहा था कि कारसेवकों की लाशों पर इन्होंने राजनीति की है। उसका जवाब निर्दोष लोगों की हत्या करके दिया जाएं, यह नहीं हो सकता ।

महोदया, आज वक्त आ गया है कि हम यह विचार करें कि गुजरात की स्थिति क्या है। आज गुजरात की स्थिति बहुत गंभीर हैं। गुजरात गांधी जी का प्रांत माना जाता रहा है, एक कवि ने गुजरात के बारे में कहा है कि –

"गांधी के घर में गोडसे पुन: घुस आया है ।

इस महावीर, गौतम बुद्ध को धरती को

नरदैत्य रक्तरंजित करने आया हैं"।

गुजरात में जो रक्तरजित लोग है वे अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए यह स्थिति निर्मित हो गई है।

महोदया, मैं यह कहना चाहता हूं कि आए दिन राजधर्म का जो वक्तव्य इस देश के गृह मंत्री, प्रधान मंत्री और गुजरात के मुख्य मंत्री देते हैं, उसके बाद उनको क्लीन चिट दे दी जाती है। उससे लगता है कि एक तरफ तो राजधर्म की बात की जा रही है और दूसरी ओर गुजरात का मुख्य मंत्री राजधर्म का पालन नहीं करता है, यह केवल वक्तव्य धर्म का पालन करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता है।

महोदया, आज हमारे सामने कई अनगिनत सवाल है। उन सवालो का मैं यहां जिक्र करना चाहता हूं कि गोधरा के हत्यारों के बदले में अहमदाबाद में नए हत्यारो की फौज खड़ी करने का कंलक किसके माथें पर माननीय गृह मंत्री जी लगाएंगे? क्या यह सच नहीं है कि यदि गुजरात की सरकार निकम्मी नहीं होती तो लोगों को गुजरात में अपने हाथ में कानून लेने का अवसर नहीं मिलता है। क्या इस बात का जवाब दिया जाएगा कि गोधरा के गुंडो की सजा अहमदाबाद के बेकसूरों को क्यों दी गई है? गुजरात के अन्य स्थानों पर जो निर्दोष लोगों की क्रूरतम ओर वीभत्स हत्या की गई है जिनमें महिलाएं भी है, गर्भस्थ शिशु भी है, उनकी हत्या का जो कंलक है उसके लिए कौन जिम्मेदार होगा? यदि लोग प्रतिशोध का फैसला खुद करेंगे, लोगों को इस बात की खुली छूट दे दी जाएगी तो आखिर शासन का क्या कर्तव्य रह जाता है? जब शासन अपने कर्तव्य का निर्वाहन खुद नहीं कर पाता है तो यह आवश्यक हो जाता है कि हमारे सविधान में आर्टिकल 355 में जिस बात का उल्लेख किया गया है, उसका पालन किया जाए। महोदया, मैं यह कहना चाहता हूं कि गोधरा हत्याकांड में शमिल लोगो को तो सख्त से सख्त सजा मिले ही लेकिन उसके बाद गुजरात के अन्य स्थानों पर जो हिंसा फैली है उसके लिए लोगों को सख्त से सख्त सजा कब तक मिल पाएंगी इस बात को स्पष्ट करने की बात है। इस देश में रक्षा मंत्री जब ये कहे कि इस देश के मुस्लिमों की हालत दयनीय करने के लिए जिम्मेदार कांग्रेस पार्टी है और दूसरी तरफ गृह मंत्री कहें कि कांग्रेस पार्टी मुस्लिमों के तुष्टिकरण के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। तो गृह मंत्री एक बात कह रहे है और रक्षा मंत्री जिसे हम रक्षा मंत्री मानने के लिए तैयार नहीं है वह दूसरी बात कह रहें है। इस सरकार की यह स्थिति हों गई है कि चित भी मेरी पट भी मेरी अंटा मेरे बाप का। यह सारी स्थितियां हो चुकी हैं। इसकी वजह यह है कि माननीय रक्षा मंत्री जी अपना चुनाव क्षेत्र ढूंढने के लिए वापिस गुजरात जा रहे हैं। इसकी वजह यह है कि एक को बहुत कम्युनल पोलराइजेशन के लिए खुली छूट दी जाती है और दूसरी तरफ ऐसे वक्तव्य दिए जाते हैं कि वह चोटों पर मरहम लगा सके। लेकिन यह कवेल एक दिखावटी बात है। मैं केवल एक बात कहना चाहता हूं कि सरकार से हमें कोई उम्मीद नहीं है। इस सरकार से उम्मीद इसलिए नहीं है कि सरकार में बैठे हुए गृह मंत्री और इस सरकार का बैठा हुआ प्रधानमंत्री बहुत गैर जिम्मेदाराना वक्तव्य दे रहे है। यह जो सरकार है रेसपिरेटर पर चल रही है, किसी भी दिन इस सरकार की नैय्या पार होने वाली हैं । इसलिए आवश्यकता है कि सरकार अब नैतिकता के नाते गुजरात के मुख्य मंत्री के खिलाफ कदम उठाए, गुजरात में शांति की बहाली करें, गुजरात के लोगों में इस प्रकार का वातावरण निर्मित हो कि लोग दूसरे पर विश्वास करके वहां रह सकें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री बलबीर के0 पुंज(उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदया, मै आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस चर्चा में भाग लेने का अवसर दिया। जो मूल प्रस्ताव था वह डा0 मनमोहन सिंह जी ने रखा था और उसकी विवेचना जो चर्चा का आरम्भ था वह अर्जुन सिंह जी ने किया था। अर्जुन सिंह जी जब कल बोल रहे थे तो वह 1932, 1933 में और फिर जर्मनी में पहुंच गए। उसके बाद जो उन्होंने भाषण दिया, उससे जो भाषण हुए इस इस तरफ से उन पर काफी असर था।

[**उपसभाध्यक्ष(श्री नीलोत्पल बसु) पीठासीन हुए ।**]

4.00 p.m.

मैं देख रहा था और मुझे आशा थी कि जब अपने सदन के नेता श्री जसंवत सिंह जी ने यह कहा कि इस प्रस्ताव के साथ हम लोग सहमत है और हम सब लोग एक मत से इस प्रस्ताव को पास करें तो मेरी अपेक्षा थी कि हम लोग जो इस चर्चा में भाग लें रहे है वह लोग गुजरात की समस्या का निदान निकालने का प्रयास करेंगे, गुजरात के ऊपर जो अभी जख्म लगे है उस पर मरहम लगाने की कोशिश करेंगे, गुजरात के अंदर जो लाखों लोग विस्थापित हैं वह कैसे अपने घर जाएं उसके लिए कोई न कोई सुझाव होंगे और प्रयास होगा। परन्तु अर्जुन सिंह जी ने जिस तरह से बहस की शंरूआत की और बाकी लोगों ने खास करके मेरे वामपंथी मित्रों ओर कांग्रेस के मित्रों ने उसको एक उदाहरण के रूप में स्वीकार किया और महाभारत के अर्जुन की तरह इन सब लोगों की जो नजर थी, जो दृष्टि थी वह पक्षी की आंख पर थी और वह पक्षी की आंख थी किस तरह मुसलमानो को डरा धमका कर संघ परिवार का हौव्वा दिखाकर उनके वोट प्राप्त किए जाए न कि गुजरात के जख्मों पर मरहम लगाई जाए। उपसभाध्यक्ष जी गुजरात में दंगे हुए वह किसी भी सभ्य समाज केलिए जो हुआ वह कंलक है। हम सब लोग उसके ऊपर शर्मिन्दा हैंऔर भारतीय जनता पार्टी के जो लोग है हम सब लोगो के लिए तो और भी दुख की बात है कि जो अब तक हम लोग गर्व से यह कहते थे कि हमारे शासनकाल में कोई बडा दंगा नहीं हुआ...इसके बाद हम यह दवा नहीं कर सकेगे और यह हमारे लिए अफसोस की बात है कि इस दंगे की वजह से पाकिस्तान जो कि पुरी दुनिया की नजंरो में एक आतंकवादी देश केरूप में प्रस्तुत हुआ था, आज उसका स्थान हमारे मुकाबले में ऊंचा उठा है और इससे किसी भी देश भक्त के मन को ठेस लगना स्वाभाविक हैं। उपसभाध्यक्ष जी, 1952 से लेकर 1977 तक कांग्रेस का शासन रहा है, उस दौरान लगभग 200 साम्प्रदायिक दंगे हुए और दंगो का कंलक तो हमारे मस्तक पर बहुत पुराना है, सौ साल से दंगे हो रहे है। जैसा कि मैंने पहले निवेदन किया कि 1952 और 1977 के बीच में दो सौ के करीब दंगे हुए, परन्तु उन दंगो की वजह से किसी भी मुख्य मंत्री ने त्याग-पत्र नहीं दिया, किसी भी चीफ सैक्रेटरी ने त्याग-पत्र नहीं दिया, कभी त्याग-पत्र को इस तरह का विषय नहीं बनाया गया जिस तरह का विषय पिछले दो महीने से बनाया जा रहा है। ऐसा महौल बनाया गया है कि जब तक मुख्य मंत्री का त्याग पत्र नहीं होगा तब तक गुजरात में शांति स्थापित नहीं हो सकती हैं। यह जो गुजरात में दंगे हुए हैं, उनकी वजह से दूनिया के अंदर हमारा मस्तिष्क इतना नीचे नहीं हुआ है, इसका कारण क्या है?

उपसभाध्यक्ष जी, इसका एक कारण मीडिया का कवरेज है। टी0वी0 पर 24 घंटे घटनाओं को दिखाया जाता है, बताया जाता है। मेरे से पहले हमारे साथी बी0जे0 पंडा बोल रहे थे और वे बता रहे थे कि किस तरह से मीडिया ने कम्पटीशन में आ कर के , क्योंकि वहां पर बड़ी प्रतिस्पर्धा होती है, एक के बाद एक फ्रेम दिखाने की तत्परता दिखाई। उसकी वजह से हमारे देश का नाम पूरे विश्व में बदनाम हुआ और हमारी छवि खराब हूई। इन दृश्यों को दिखाने की वजह से देश में एक तरह की उत्तेजना फैली और उसका इंटरनेशनलाइजेशन हुआ। न केवल टी0वी0 चैनल्स पर उत्तेजक दृश्य दिखाये गये , बल्कि मीडिया के अंदर उसका किस तरह से कवरेज हुआ, उसका मै आपको एक उदाहरण देना चाहता हुं।

उपसभाध्यक्ष जी, मेरे पास आउट लुक मैगजीन है और यह 6 मई का इश्यु है। इसमे एक लेख है और इसको लिखने वाली अरूंधिता हैं। उनका सुप्रीम कोर्ट में क्या झगडा था इसमें मैं नहीं जाना चाहता हूं। हम सब लोग जानते हैं कि कंटेप्ट ऑफ कोर्ट में उनको 24 घंटे का

कारावास हुआ था। जब वह कारावास के बाद बाहर आयी तो उनका फूलों से ऐसे स्वागत हुआ जैसे कि वह दस-पांच साल की बहुत बड़ी पब्लिक काज़ में जेंल काटकर आई है। मैं उनके लेख को आपको अनुमति से उद्धृत करना चाहता हूंः-

"Gujarat, the only major state in India to have a BJP government has, for some years, been the petri dish in which Hindu fascism has been fomenting an elaborate political experiment. Last month, the initial results were put on public display.

Within hours of the Godhra outrage, the vlshwa Hindu Parishad and the Bajrang Dal put into motion a meticulously planned pogrom against the Muslim community. Officially the number of dead is 800. Independent reports put the figure at well over 2,000. More than a hundred and fifty thousand people, driven from their homes, now live in refugee camps. Women were stripped, gang-raped, parents were bludgeoned to death in front of their children. Two hundred and forty dargahs and 180 masjids were destroyed-- in Ahmedabad the tomb of Wali Gujarati, the founder of the modern Urdu" poem, was demolished and paved over in the course of a night. The tomb of the musician Ustad Faiyaz Ali Khan was descrated and wreathed in burning tyres. Arsonists burned and looted shops, homes, hotels, textiles mills, buses and private cars. Hundreds of thousands have lost their jobs.

A mob surrounded the house of former CongYess MP Iqwbal Ehsan Jaffri. His phone calls to the Director-General of Police, the Police Commissioner, the Chief Secretary, the Additional Chief Secretary (Home) were ignored. "Mobile police vans around his house did not intervene. The mob broke into the house." Now comes the sensitive thing. "They stripped his daughters and burnt them alive. Then they beheaded Ehsan Jaffri".

श्री जनेश्वर मिश्र (उत्तर प्रदेश) : उनको कह दीजिए कि टेबल पर रख दें, पूरा पढ़ रहे हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : यह एक मैंबर की इच्छा है कि वह अपने टाइम का कैसे इस्तेमाल करे, इस पर मैं हस्तक्षेप नहीं करूंगा।

श्री बलबीर पुंज: महोदय, मैं इसे पढना बंद करता हूं। यह एक बहुत दर्दनाक वाकया है। बहुत बड़ी लेखिका ने लिखा है और लगभग आंखो देखा हाल है कि किस तरह से अहसान जाफरी की बेटियों के साथ बलात्कार हुआ और किस तरह से उनकी हत्या की गई। उससे पहले जो कहा गया और जो विपक्ष की तरफ से कहा गया, उसमें विशेष अंतर नहीं है। अगर विपक्ष से जो कहा गया, उस सबका मै निचोड़ निकालू, आरोप पत्र के रूप में देखूं तो जो यह दो पैराग्राफ में कहा गया है, वह यही था। उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरे पास दूसरा अखबार है,

"एशियन एज" । यह दो मई का अखबार है। इसके पहले पेज पर एक पांच कॉलम की बॉक्स आइटम है। एशियन संघ परिवार का अखबार नहीं है, कनफर्म सैक्युलरिस्ट एम.जे.अकबर, उसके ऐडिटर हैं। इस न्यूज आइटम के लेखक श्री टी.ए.जाफरी है। अब यह टी.ए.जाफरी कौन है? टी.ए.जाफरी अहसान जाफरी साहब, जो उस आग की घटना में मारे गये उनके बेटे है। महोदय, यह दो मई का अखबार है। इसमें उन्होंने यह अर्टिकल लिखा है। उस आर्टीकल में उन्होंने बयान किया है कि उनके परिवार के ऊपर किस तरह की विपदा आयी। महोदय, हमने पहले अरूंधती राय के एशियन एज के आउट लुक में देखा कि किस तरह से उनकी पुत्रियों का बलात्कार हुआ अर्थात टी.ए. जाफरी की बहनो के साथ बलात्कार हुआ। आंखो देखा हाल था।जाफरी साहब लिखते है। "I have no clear memory of what happened for a few days after the gory incident. We were all too numbed and shocked. Among brothers and sisters, I am the only one living in India. And I am the eldest in the family. My sister and brother live in the US".

एक माननीय सदस्य : वहां जाकर जलाया।

श्री बलबीर पुंज : बता रहे हैं। जो लोग यहां रहते नहीं हैं, वह लड़का और लड़की अमेरिका में रहते है, लिखने वाले जाफरी साहब के लड़के है, छपा एशियन एज के अंदर है और आपकी अरूंधती राय, यहां पर आखों देखा बयान करती है कि किस तरह से उन लड़कियों का रेप हुआ और किस तरह से उनकी हत्या की गयी। मुझे लगाता है कि इस तरह की घटनाएं जिस तरह से जिम्मेदार मैग्जीन्स और अखबार छापते है और किसी तरह तोते की तरह उन घटनाओं को यहां दोहराया जाता है और विश्व के अंदर भारत का नाम खराब किया जाता है, वह आपने आप में बहुत शर्मनाक बात है। मीडिया ने किस तरह से इन दंगो को मिस रीप्रेजेंट किया, किस तरह से उन सब गलत सूचनाओ को यहां के लोगों ने दुरूपयोग किया और दुरूपयोग करने के बाद इंटरनेशनल वर्ल्ड में, अंतराष्ट्रीय जगत में भारत की जो स्थिति थी, जो नाम था, उसे खराब किया, मै उसके बारे में और नहीं बोलना चाहता हूं। मैं आपको दो और उदाहरण देना चाहता हूं। इसी एशियन एज में करीब 6 कालॅम की खबर थी । "If you don't like, kill them -- Remove 'if. Students and parents shocked." इस न्यूज आइटम में इस तरह से था कि गुजरात में जो परीक्षा चल रही है उसके क्वेश्चन में नाजियों की कोई कोटेशन रखी गई हैं जिससे बच्चों का नाजिज्म में ओरिएटेंशन किया जा सके, यह चार्ज था। इस तरह का चार्ज जिस तरह से बहुत बार दोहराया भी गया है वह जिस पुस्तक में से लिया गया है वह ई.एम. फोस्टर द्वारा लिखी गई है। यह एप्रूव्ड टैक्सट बुक है, 1985 से है। यह इस टैक्सट बुक मे है और यह चांस की भी बात है जिसने यह क्वेश्चन पेपर बनाया है वह माइनोरिटी के टीचर हैं, माइनीरिटी कम्युनिटी को बिलोंग करते है। गलत सूचनाओं के आधार पर अगर यह आरोप लगाया जाए तो यह भाजपा को तो बदनाम करते है लेकिन इसके साथ-साथ देश के माथे पर भी कंलक लगातें हैं, देश की सेवा नहीं करते हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : पुंज जी, मैं आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि भारतीय जनता पार्टी के लिए छत्तीस मिनट का टाइम है और आप पंद्रह मिनट बोल चुके हैं। आपके दो साथियो को अभी बोलना है। आप जैसे-जैसे बढ़ाएगें उनका टाइम कम होगा।

श्री राजूपरमार : आपके मित्र बोलने वाले हैं...(व्यवधान)....

श्री बलबीर के. पुंज : देखिए, कपिल सिब्बल जी ने कहा और उससे पहले मीडिया में भी कहा गया कि "Gujarat is a laboratory of Hindutva." If Gujarat is a laboratory of Hindutva, let me tell you that Godhra is a laboratory of secular fundamentalists like you. What do you mean by saying, "Gujarat is a laboratory of Hindutva?"

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Please address the Chair.

SHRI BALBIR K. PUNJ: They should also observe some discipline while sitting there, उपसभाध्यक्ष जी, जहां तक हम लोगो का प्रश्न है, हम लोगो के लिए गुजरात ही लेबोरेट्री है, पूरा विश्व लेबोरेट्री है....(व्यवधान)....

श्री राजू परमार : सही कहा आपने, जवाब आ गया है...(व्यवधान)...

श्री बलबीर पुंज : हम लोग" वसुदेव कुटुम्बकम् " को मानने वाले हैं...(व्यवधान)....

हम लोग पूरी दूनिया को, पूरे संसार को अपना घर मानते है, अपने मानते हैं, संसार के सभी लोगों को अपना मानते हैं। हमारी लेबोरेट्री केवल गुजरात नहीं है, हम लोग पूरे विश्व को अपनी लेबोरेट्री मानते है। हिंदू दर्शन के अंदर,

"ऊं सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्य करवावहै ।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥

ऊं शांति ,शांति, शांति ।"

यह हमारी फिलोसोफी है....(व्यवधान)...आप लोगों ने....(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल) : आप चेयर को एड्रेस कीजिए।

श्री बलबीर पुंज : उपसभाध्यक्ष जी, इन लोगों ने गोधरा को, जो सेक्युलर लोग है, इन्होंने गोधरा को अपनी लेबोरेट्री बनाया। गोधरा कांड में कौन लगे थे? गोधरा की घटना क्या थी? गोधरा की घटना क्या थी? गोधरा में ...(व्यवधान)....

एक माननीय सदस्य : हम भी यही पूछ रहे हैं।

श्री बलबीर पुंज : मैं बता रहा हूं...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आपको टिप्पणी करने की जरूरत नहीं हैं....(व्यवधान)..

श्री बलबीर के. पुंज : वहां पर हजार, पद्रह सौ, दो हजार, ढाई हजार लोगों का मोब था। उस गाड़ी में राम धुन गाते-बजाते बच्चे, औरते और पुरूष आ रहे थे। मोब ने उसमे आग लगा दी। क्यों आग लगा दी ? कैसे उनकी आंखो पर घृणा की पट्टी बंध गई कि जो निर्दोष लोग गाडी में थे वे उन्हें राक्षस रूप में दिखने लगे। पिछले दस साल से रामभक्तो का

डेमोनाइजेशन हुआ है, हम जानते है कि यह डेमोनाइजेशन किन्होंने किया है? किन्होंने उन्हे राक्षस के रूप में प्रस्तुत किया जिससे एक आम मुसलमान को वे लोग एक राक्षस के रूप में दिखने लगे और उन्होंने उसे आग लगा दी। ये जो सेक्यूलर फन्डामेंटलिस्ट हैं उनकी प्रयोगशाला में यह पहला प्रयोग था।

उपसभाध्यक्ष जी, कहा गया कि गुजरात को गोडसे की धरती बना दिया गया। गोडसे तो फांसी पर लटक गए, चले गए दूनिया से, समाप्त हो गए और उनके साथ वह विवाद भी समाप्त हो गया। जिन्ना जो हैं, उनका बनाया हुआ देश भी है और जिन्ना के मानस पुत्र आज भी बसते हैं। हम लोग जानते है कि जिन्ना को पाकिस्तान बनाने की प्रेरणा किसने दी थी ।

"All the intellectual arguments, which Mr. Jinnah needed to justify his demand for Pakistan, were provided to him by the people in the Left. They were the people who provided all the intellectual inputs which Mr. Jinnah needed for the creation of Pakistan.'

मैं अपने कांग्रेस के मित्रो को याद नहीं कराना चाहता हूं। समय कम है, मै उनको बता सकता हूं। उन दिनों गांधी जी के बारे में, सुभाष के बारे में, पटेल के बारे में इन वामपंथियों ने किस तरह के विश्लेषण उपयोग में लाए थे। मैं उस बात को कहना नहीं चाहता हूं। मैं कल भाषण सुन रहा था। बहुत सारे लोगो के सुने । शाबाना आजमी का सुना। उन्होंने विस्तार से बताया कि कितने मुसलमान मारे गए, कितनी मस्जिदें जलीं और कितने लोग फायरिंग में मारे गए....(व्यवधान)...देखिए, जितने भी लोग गुजरात में मरे, हम लोगो के लिए वे भारतीय पहलें थे, इन्सान पहले थे, हिन्दु और मुसलमान बाद में थे। अब अगर आप इसको हिंदू और मुसलमान की बात करके केवल मुसलमानों की बात करेंगे तो दुनिया में जेनोसाइड का मेसेज जाता है, जो कि गलत है।

गुजरात में जो हुआ वह अपने आप में शर्मनाक है। उसको ओर बढ़ाने की बात जरूरी नहीं है। उसको नरसंहार कहने की जरूरत नहीं है। हमारे देश पर साम्प्रदायिक दंगो का एक कंलक चला आ रहा है, एक कंलक और लग जाएगा। इसलिए उसको हम नरसंहार कहकर अपने देश को ज्यादा बदनाम न करें।

मैं बताना चाहता था कि एक लाख मुसलमान अगर वहां कैम्पस में हैं तो 40 हजार हिंदु भी है। अगर 900 लोग कुल मरे, उसमें 500 के करीब मुसलमान है तो 400 हिंदु भी है। अगर सत्य बोलना हैं तो पूरा सत्य बोलें। आधा सत्य असत्य से ज्यादा खतरानाक होता है। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सोचता हूं कि अगर इस चर्चा में से हम लोग गुजरात के जख्मों पर थोडा मरहम लगा सकते है, गुजरात में स्थिति बेहतर कैसे हो सकती है, इसकी चर्चा होती तो ज्यादा अच्छा होता। मै इस मामले में एक सुझाव देता हूं। अगर हम सब सांसद मिलकर अपना एक महीने का वेतन प्राइम मिनिस्टर रिलीफ फंड के लिए गुजरात के लोगों के लिए दें तो उससे एक अच्छा संदेश जाएगा। उससे गुजरात के लोगों को और दुनिया के लोगों को भी लगेंगा कि यहां पर जो चर्चा होती है, चह केवल चर्चा के लिए नहीं होती है बल्कि उसका कुछ सार्थक परिणाम भी होता है।धन्यवाद ।

श्री जनेश्वर मिश्र : धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं नेता सदन को धन्यवाद देना चाहता हूं। विपक्ष की तरफ से मोशन आया। उन्होंने सत्ता पक्ष की तरफ से यह कहा

कि हम लोगो को यह मोशन मानने में कोई ऐतराज नहीं है। हमको याद है, इसी से मिलता-जुलता मोशन बगल के सदन में भी आया था। वहां देर रात तक बहस हुई और उसके बाद जब ये लोग निकले थे तो इनके कुछ लोगों ने दोनो विक्ट्री वाली उंगालिया दिखाकर अपनी जीत दर्ज करायी थी। बगल वाले सदन में इनकी ताकत ज्यादा हैं।तो वहां दोनो उंगलिया तानकर विक्ट्री दिखाते हैं। इस सदन में इनकी ताकत कम है। जहां ताकत ज्यादा हो वहां उंगली तानकर जीत दिखाओ...।

और जहां ताकत कम हो वहां घुटना टेक दो इस सरकार की यही नीति है और इसी आचरण पर यह चलती है। घुटना बहुत मत टेका कीजिए, बार-बार घुटना टेकने ये घुटने में दर्द होता है और फिर बहुत देर तक इलाज कराने जाना पड़ता है। मैं आपसे कहूंगा, जरा यह नीति बंद कीजिए । यहां भी वोट होना चाहिए था, फैसला होना चाहिए था। यह भी एक सदन है। मै यह नहीं मानता, इतना खतरनाक कैसे हो गया। बटवारे के बाद शायद एक बार फिर से बड़े पैमाने पर हिन्दु-मुसलमान का मामला इतना बिगड़ गया। हम संसदीय लोकतंत्र भले ही चलाते हैं, लेकिन इतना भयानक रूप तो कभी नहीं हुआ था। मैं उन घटनाओं का जिक्र नहीं करूगां और चाहूंगा भी नहीं , क्योकि बहुत लोग बोल चुके है, बड़ी कडवी घटनाएं है, लेकिन दिल में दर्द तो हुआ है। 15 ही करोड सही, 17 ही करोड सही, पूरे देश में बसे हुए लोगों का दिल तो टूट गया हैं। क्यों टूटा, इसको क्भी सोचा है? आप कहेंगे हजारो लोग मारे गए, कोई कहेगा तीन हजार मारे गए, तीन हजार या पंद्रह हजार से गुजरात उजड नहीं जाएगा, हिन्दुस्तान मिट नहीं जाएगा, लेकिन दिल में जो दरार पड़ गई, वह सौ करोड़ के दिल में पड़ी है। इस बात को समझने की कोशिश कीजिएगा। कितना खतरानाक नतीजा आगे चलकर आएगा, यह नहीं कहा जा सकता। दस साल, पंद्रह साल बाद जब हम नहीं रहेंगे, आडवाणी जी नहीं रहेगे, अटल जी नहीं रहेंगे, तो यह देश इसका नतीजा भोगेगा। बहुत बुरा होगा। आप लोग आजम के भाषण पर हल्ला मचाते हैं, लेकिन आप लोगों ने जो कर दिया, आपके लोगों ने जो कर दिया ....(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप भी थोडा चेयर को एड्रेस करके कहिए।

श्री जनेश्वर मिश्र : अच्छा सर, गलती हो गई।

उपसभाध्यक्ष : आपको मुझे बोलना नहीं चाहिए।

श्री जनेश्वर मिश्र : मेरे मन मे दुख था इसलिए हुआ और ये सभी लोग हमारे पुराने मित्र है इसलिए इन लोगो को सीधे कह दिया। मैं मुआफी मांगता हूं।

उपसभाध्यक्ष(श्री नीलोत्पल बसु) : लेकिन जहां तक मैं इस कुर्सी पर हूं मुझे सब के लिए समान व्यवहार करना पडेगा।

श्री जनेश्वर मिश्र : हम लोग साथ रहे है, यह इसलिए हमने मुआफी मांग ली। आपसे मुआफी मांगता हूं। बहुत खतरनाक नतीजा निकलने वाला है। मै उन घटनाओं में से किसी का जिक्र नही करूंगा, न अखबार पढूंगा। बहुत से अखबारो में, बहुत सी मैगजीस में, बहुत सी मीडिया में बहुत सी बाते आई है। हमने प्रधानमंत्री जी का भाषण भी सुना है, उपसभाध्यक्ष महोदय, उन्होंने मीडिया पर इतना गुस्सा दिखाया कि हमें समझ में ही नहीं आ रहा था कि इतना गुस्सा दिखाने की क्या जरूरत थी। आदमी दर्द से कराह रहा है। मीडिया ही नहीं, बहुत सी विदेशी एंजेसिया बोल गई। यूरोपियन यूनियन से लेकर कई दूतावास के लोगों

ने, उस पर वह दकियानूसी विदेश नीति का सिद्धांत, हमारे अंदरूनी मामले में किसी विदेशी को नहीं बोलना चाहिए, आप अपने देश में या कोई भी सरकार अपने देश में, अपने निरीह लोगों के कत्ल करती रहे और दूसरे लोग जो मानव मूल्यो की हिफाजत करने वाले हैं उस पर न बोला करें, यह कैसे हो सकता है। मूल्य होते है, वे मूल्क की सरहद से ऊपर हो जाया करते है। अभी पाकिस्तान में लोकतंत्र की घटना हुई है। आप कहिए कि भारत इस पर न बोले क्योंकि उनका अंदरूनी मामला है। लोकतंत्र का नाटक हो रहा है। इसलिए जब कभी इंसानियत खतरे में पड़ जाये तो विदेश नीति की वह दकियानूसी सरहद टूट जाया करती है। लेकिन यह तर्क दिया जाता है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : एक मिनट, जनेश्वर जी, आपका 6 मिनट टाइम था, मैं दीपांकर मुखर्जी साहब से पूछ लेता हूं, सीपीआई(एम) का जो 9 मिनट टाइम बचा हुआ है, वह आप इनको देने के लिए तैयार हैं?......(व्यवधान)...

श्री जानेश्वर मिश्र : नहीं, सर, एक गुरूचरण सिंह टोहडा साहब भी नहीं बोले हैं, उनका बचा टाइम दे दें अगर....(व्यवधान)...मै नोट कर रहा था।

उपसभाध्यक्ष (श्री नोलोत्पल बसु) : आप 9 मिनट और बोल सकते है ।....(व्यवधान).नहीं-नहीं, सीपीआई(एम) के मैंबर है।...(व्यवधान)...

श्री दीपांकर मुखर्जी : दे दिए आपको 9 मिनट।....(व्यवधान)....

उपसभाध्यक्ष : 9 मिनट आपको टाइम मिल गया। अब आप बोलते जाइये।..(व्यवधान)..

महोदय, यह स्थिति कितनी दुखदायी है और इस का क्या नतीजा निकलेगा? पहले तो गुजरात में यह बहस चल कि मोदी साहब को गुजरात का सरदार पटेल कहा गया जोकि सरदार पटेल का अपमान था। सरदार पटेल गुजरात के होंगे या मोरारजी देसाई गुजरात के होंगे, लेकिन गुजरात गांधी का कहा जाता है, भारत गांधी का कहा जाता है। तो अगर कुछ लोग इस तरह की बहस चलाना चाहे तो वह सरदार का अपमान करेंगे, लेकिन बडें पैमाने पर सरदार पटेल के नाम के साथ मोदी साहब को घसीटा गया। उपसभाध्यक्ष महोदय, गांधी कोई हाड-मांस के व्यक्ति नहीं थे। गांधी तो भाईचारा, प्रेम व्यवहार व आचरण के एक सिद्धांत थें। वे सत्य, अहिंसा के एक मूल्य थे। तो उस गुजरात में अगर कोई सरदार पटेल बनने लगे, कल को मोरारजी देसाई बनने लगे तो हम लोगो को गुजरात के बारे में सोचना मुश्किल हो जाएगा। मान्यवर, मै तो निवेदन करूंगा कि आज गांधी जी की भावना को कत्ल किया जा रहा है और उसे केवल गुजरात में कत्ल नहीं किया गया है, दफनाया गया है। हमारे उत्तर प्रदेश में आज एक सरकार बन गयी होगी या कल बन जाएंगी। उस में दो तरह के लोग मिले हैं। एक दिमाग के लोग वे है जिस ने किसी जमाने में गांधी जी को गोली मारी थी और एक दिमाग के वे लोग मिले है जोकि गांधी जी को गाली बका करते है। गोली ओर गाली वाले तत्व वहां इकट्टे हो गए हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश गुजरात नहीं हैं। गुजरात में जो झगड़े हुए, वे गुजरात की सरहद के बाहर नहीं गए। इस को कहते है बैंड कंडक्टर झगडा। महोदय, साइंस में हम को सुचालक, कुचालक पढ़ाया जाता था। लकड़ी को कुचालक माना जाता है। आप उसे एक तरफ से जलाइए तो भी दूसरी तरफ से ठंडी रहती है। लोहे को सुचालक माना जाता है। वह एक

तरफ से जलता है तो दूसरी तरफ से भी गर्म हो जाता है। महोदय,उत्तर प्रदेश में अयोध्या है, काशी है और मथूरा है और अयोध्या में कोई झंझट होता है तो मुंबई में आग लगती है, बडौदा और अहमदाबाद तक आग लगती है, बडौदा और अहमदाबाद तक आग लगती है। वह हिन्दु मुस्लिम रिश्तों का सुचालक चरित्र हुआ करता है? फिर गुजरात का असर गुजरात तक या बहुत हुआ तो भिवड़ी और कल्याण तक गया। लेकिन इस से देश भर के अल्पसंख्यको का दिल टूटा है, इस बात को जरूर दिमाग में रखना चाहिए। तो इसे कैसे रोका जा सकता है। मान्यवर, यह तो हम भी मानकर चलते हैं कि नरेन्द्र मोदी को हटा देने से इस समस्या का हल नहीं हो जाएगा क्योंकि नरेन्द्र मोदी, आडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी जी में सोच के हिसाब से कोई फर्क नहीं हा। ये एक ही सोच के लोग है। हां कोई छोटी कुर्सी पर है और कोई बड़ी कुर्सी पर है, लेकिन चूकि वे छोटी कुर्सी पर बैठे थे, इसलिए उन कर सीघी जिम्मेदारी बनती थी कि इस तरह की घटनाओं को न होनें दें। लेकिन यह कह देना कि यह तो क्रिया की प्रतिक्रिया है, तो क्रिया की शुरूआत कहां से होती है्? देश का माहौल बिगाडने के लिए, पूरे देश में घूम-घूमकर, सर्वोच्च न्यायलय फैसला न करें तब भी यहां मैं मदिंर बनाऊंगा। एक साधु ने कहा अगर मदिंर नहीं बना तो मैं प्राण दान दें दूगां। महोदय, लोगो का मिजाज बिगड़ता है जब अदालत, संविधान-सब के खिलाफ सरे आम बोला जाता है और उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं होती है। फिर जिन की तदाद कम होती है, उन का दिमाग ज्यादा बिगड़ता है। उसके रेल जलने और कार सेवकों व राम सेवको को फूंकने के लिए कोई पाकिस्तान से नहीं आया था। आप ने माहौल बनया था, अयोध्या से लेकर पूरे देश में घुम-घुमकर कि संविधान कोई चीज नहीं हैं, अदालत कोई चीज नहीं है। उन्होंने यह माहौल खुले आम, डंके की चोट पर बनाया था। उसका नतीजा यह हुआ कि वे बौखलाए हुए थे और बौखलाहट में बेवकूफी कर गए। महोदय, संप्रदायवादी चाहे अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक हो- मैं दोनों की निंदा करता हूं। मैं उसे पंसद नहीं करता हूं।

अल्पसंख्यक भी संप्रदाय वादी होता है, बहुसंख्यक भी संप्रदायवादी होता है। यहां बहस संप्रदायवाद बनाम धर्मनिरपेक्षता पर बहस चली। हम उस बहस को सुन रहे थे, लेकिन मै इतना ही कहूंगा कि सबसे बढिया धर्मनिपेक्षता वह होती है, जो अल्पसंख्यको के जैसे संप्रदावाद को भी बहुसंख्यक के तिल के बराबर संप्रदायवाद को हल्का कर देती है। कितने लोग रेल के अन्दर मरें है और बाद में कितने लोग गुजरात में मरे है। आपने इसका हिसाब-किताब किया है। कहां 80 करोड़ लोग और कहां 15 करोड़ लोग। अगर 80 करोड़ लोगों को संप्रदाय वादी उन्माद में भिड़ा दिया तो 15 करोड़ तो कहीं रह नहीं पाएंगे। कहां जाएंगे?अल्पसंख्यक के पहाड के बराबर सांप्रदायिकता बहुसंख्यक के तिल के बराबर सांप्रदायिकता के सामने हल्का पड़ जाया करती है। अगर इस बात को हकूमत चलाने वाले लोग नहीं सोचेंगे तो कभी भी काम पूरा नहीं किया जा सकता और इसका बुरा असर पडेंगा। एक बार हिन्दु मुसलमान के मामले में हम लोग फिर से बुरी हालत में फंस गए है। कहां तो हमारे जैसे आदमी, हमारे नेता जी जैसे आदमी, लोहिया जैसा आदमी सोचा करता था कि यह सरहद मिटाई जाएगी, महासंघ बनाया जाएगा। अगर जर्मनी में बर्लिन की दीवार तोड़ी जा सकती है तो यह नकली दीवार क्यों नहीं टूटेगी।

उपसभाध्यक्ष महोदय, अगर आपने यहां के अल्पसंख्यकों को इसी तरह सताया गया तो पाकिस्तान में बसे हुए मुसलमानो को हम कोई अच्छा संदेश नहीं देंगे। आडवाणी जी के नेता दीनदयाल उपाध्यय जी अंखड भारत की बात किया करते थे। हम अंखड भारत की बात तो नहीं

बोलतें थे क्योंकि अंखड भारत से दंभ निकलता था, हम महासंघ की बात बोलतें थे कि तुम भी रहो, हम भी रहें, लेकिन इस लाइन को मिटाने की कोशिश करो। अगर आज यही हरकत उनकी रही तो पचास साल के लिए फिर हमारा सपना टूट जाएगा। यह सपने हुआ करतें हैं। किसी जमाने में हमारे पुरखों ने देखा कि हम मुल्क को आजाद कराएंगे, यह सपना और उसको पूरा कराया। किसी जमाने में जिन्ना साहब ने देखा कि मुसलमानो का अलग देश बनवाएंगे, उनका यह सपना था और वह अपना सपना पूरा कर गए। लेकिन सच यह है कि जिन दिनों हिन्दुस्तान बंट रहा था तो जिन्ना साहब ने मुसलमानों को कहा था-"तुम्हारे लिए अलग मुल्क बन गया है। मुसलमानों, तुम पाकिस्तान में चलें जाओं"। उस समय गांधी जी ने खड़े होकर कहां था-" नहीं, यही तुम्हारा वतन है, यही तुम्हारी मस्जिद है, यहीं तुम्हारी मजारे हैं, यहीं तुम्हारे पुरखों की कब्रिस्तान है, यहां तुम्हारे खेत-खलिहान है, कल कारखाने हैं तुम यहीं रहो"। गांधी जी के कहने से कुछ मुसलमान यह बस गए और कुछ जिन्ना के कहने पर वहां चले गए। मैं आत्मा में विश्वास नहीं करता, लेकिन अगर आत्मा कोई चीज है, जिसको में नही मानता, तो जिन्ना की आत्मा होगी तो वह पाकिस्तान में हिन्दुस्तान से गए मुसलमानों को देखकर रो रही होगी क्योकि उनकी मुहाजिर कहकर भागया जा रहा है और अगर गांधी की आत्मा होगी तो वह हिन्दुस्तान में उनके कहने पर बसे हुए मुसलमानों की हालत को देखकर रो रही होगी। गांधी ने कहा था तुम्हारी कोई मस्जिद नहीं गिराई जाएगी, तुम्हरी कोई मजार छूई नहीं जाएगी। आज गुजरात में वे मजारे तोड़ दी गई। मजार में हिन्दु भी पूजा करने जाता है, मुसलमान भी जाता है। वह गैर हिन्दू उतना ही है, जितना वह गैर इस्लामिक। कई मस्जिदें,जिनमें हनुमान की मूर्ति रख दी गई, मस्जिद ईट वगैरह की दीवार होती है और मजार भी ईट का एक चबूतरा होता है, मैं जानता हूं लेकिन उसके साथ इंसान के जज़बात जुड़े होते हैं। उन जज़बातों को आज चोट लगी है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) :जनेश्वर जी, अब आप समाप्त करें।

महोदय, उन जज़बातो को जो चोट लगी है, पचास साल तक भी उस चोट को भरना मुश्किल हो जाएगा। नरेन्द्र मोदी रहे या हटा दिए जाएं, यह प्रश्न है। मैं कहना चाहूंगा कि इनको हटा देने से एक संदेश देश में जाएंगा कि ऐसे ताकतवार लोग, जो हमारे ऊपर होने वाले जुल्म को रोक न पाएं या जुल्म को उकसावा दें, उनके खिलाफ कार्यवाही की जा सकती है।थोड़ा सा लोगों का दिल थमता है। यह दिल का थमना, जो मजलूम होता हैं उसके दिल का थमना अपने आप में उसके लिए बहुत बड़ी दौलत है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, प्रस्ताव में तो यह नही लिखा है, लेकिन मैं यह जरूर उम्मीद करता हूं कि संविधान के आर्टिकल 355 के तहत आपकी सरकार ने कभी बंगाल की सरकार को, कभी राबड़ी जी की सरकार को और कभी मद्रास की सरकार को कई बार नोटिस भेजा है, मैं चाहूंगा कि उसी तरह की भाषा में नरेन्द्र मोदी को नोटिस भेजिएगा, भेदभाव मत कीजिएंगा। राजधर्म का पालन बिना भेदभाव के होना चाहिए, यह नसीहत आपके प्रधानमंत्री जी ने आंखों में आंसू भरकर नरेन्द्र मोदी को दी थी। हम भी मानते है कि उनकी आंखों में उस समय आंसू आए होंगे लेकिन वे आंसू मुस्तकिल रहते, बराबर रहते तो हम मानते। गोवा में जाकर उन आंसूओं ने दूसरा रूप ले लिया, तब हमको लगा कहीं आंसूओं का ढोंग तो नहीं हुआ करता। कवि ह्दय आंसुओं का ढोंग नहीं किया करता। जो कोई भी दिखाई देता है, सत्य दिखाई देता है। जो

नकली कवि होते है वे आंसू वगैरह का ढोंग रचाकर अपनी बात जमाना चाहते हैं।

मैं चाहूंगा कि उसी भाषा में उनको नोटिस दीजिए और सम्पूर्ण विपक्ष और देश मांग कर रहा है कि इस मुख्य मंत्री को बर्खास्त करें। आज करें या कल करें। हमारे कहने से अगर झेंप लग रही है कि विरोधी पार्टी के हैं और आप समझेंगें कि हमारी जीत हो गई तो हमारे कहने से मत कीजिए, अपनी कमेटी मे फैसला करके उनकी छुट्टी कर दीजिए।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : श्री खान गुफ़रान जाहिदी। आपकी पार्टी के 10 मिनट बचें हुए हैं, आपके अलावा और भी एक स्पीकर हैं।

श्री खान गुफरान जाहिदी (उत्तर प्रदेश) : 46 मिनट थे, उसमें से 20 मिनट गए।

उपासभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल) : 20 मिनट नहीं गए हैं। मैं जो बोल रहा हूं, गिनती करके बोल रहा हूं। आपकी सुविधा और सहयोग के लिए बोल रहा हूं।

श्री खान गुफरान जाहिदी(उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष जी, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि आपने 24 घंटे की बहस के बाद मुझे बोलने का मौका दे ही दिया।

मै गुजरात के रूहफरसा फसादात, हंगामें, सानेहा, आलमिया जिसमें हजारों-लांखों लोग कैम्प में पहुंच गए, सैकड़ो की बड़ी तदाद में लोग मर गए। कैसे-कैसेदर्दनाक वाकयात सामने आए, लोगो को जला डाला गया, मैं इस तफसील से नहीं जाना चाहता क्योंकि मेरे साथियों ने वे तमाम तफसीलात आपके सामने पेश कर दी है जिनसे दिल दहलता है, रोगटे खड़े हो जाते है, इंसानियत रोती है। गांधी के देश में, गांधी जहां पैदा हुए, जहां गांधी के विचार बढे ओर वे हिन्दुस्तान में छा गए, उस जगह पर यह चीज हुई है, इससे बड़ी तकलीफ हुई है।

उपसभाध्यक्ष जी, देखना यह है कि आज 54 साल में फिरकापरस्ती का जो बीज है, वहां कहां तक बढ़ा है। बाहर के टेरेरिस्ट तो कोई भी हो सकते है लेकिन अंदर के टेरेरिस्टों और दहशतअंग्रेजो ने ऐसा जुल्म ढाया है अहमदाबाद और गोधरा दोनो जगह, इसकी मिसाल नहीं मिलती, यह बहुत दर्दनाक वाकया हुआ है। इससे दिल टूटें, सारे हिन्दुस्तान में जो जज्बात रखते है उनके जज्बात को ठेस पहूंची है, यह बात मैं कहना चाहता हूं। ये किस मुल्क की बात कर रहे है? यह वह मुल्क है जब 1947 में मुल्क तक्सीम हुआ, जिसका बड़ा जिक्र किया जेठमालानी जी ने, यहां के लोग वहां रिफ्यूजी हुए, वहां के लोग वहां रिफ्यूजी होकर आ गए, रिफ्यूजी कैंपो का उन्होंने जिक्र किया, यहां तो हमने समेटकर उनको गले से लगा लिया और हम अपने आपको रिफ्यूजी नहीं मानते लेकिन वहां कके मुहाजिर है, वहां वे आज भी मुहाजिर कौम की हैसियत के माने जाते है, वे उनको समेट नहीं सके है। यह कैसे हुआ? जब मुल्क तक्सीम होता है तो ऐसे होता है जैसे जिस्म तक्सीम हो गया हो। जिस्म तक्सीम हुआ और जो पाकिस्तानी मांग रहे थे उन्होंने दो कौमी नज़रिए पर, टू नेशन थ्योरी के नाम पर जिसका आज प्रोपगेशन कर रही है बीजेपी,आरएसएस, वीएचपी, ये सब लोग उसी का प्रोपगेशन कर रहे हैं

उसको ये लोग डराकर, धमकाकर, दबाना चाहते है, कुचलना चाहते है और यहां के नागरिको के हकों को मारना चाहते हैं। जिस वक्त मुल्क तक्सीम हुआ, उन्होंने क्या किया यहां?

वे कौन थे? वे जहाज-ए-आजादी के परवाने थे। उनमें कांग्रेस के भी लोग थे, गैर-कांग्रेस के भी लोग थे लेकिन ये सब परवाने थे। वे कांस्टीटयुऐंट असेंबली में बैठे हुए थे। वह मुल्क जब वहां चला गया तो उन्होंने उसको इस्लामी मुल्क पाकिस्तान कह दिया। यहां कितने परसेंट लोग थे? शायद 10 परसेंट भी नहीं थे लेकिन उनका दिल इतना विशाल था, उनका ह्रदय इतना विशाल था कि उन्होंने सर्वधर्म समभाव की कोख से जन्म लेने वाले सैक्यूलरिज्म को अपना लिया और यह कहा कि यहां इतने धर्म है, सबका आदर है, यहां इतनी भाषाएं हैं सबका आदर है, यहां इतने क्षेत्र है, सबका आदर है। यहां के नागरिक बराबर का दर्जा रखते है। यह है उस सैक्यूलरिज्म की शान, यह है विशालता। कौन थे वे? उसमें 10 परसेंट मुसलमान भी नहीं थे,90 परसेंट से ज्यादा उसमें गैर-मुस्लिम भाई थे, हमारे नेता थे जिनके ह्रदय बड़े थें, जज़बात बड़े थे। उन्होंने सैक्यूलरिज्म का ऐसा धागा दिया किसब मजहब जहां जी सके, सब धर्म जी सकें, सबका प्रेगेशन हो, सब भाषएं फले-फूलें, सारे क्षेत्र तरक्की करे। ऐसा ही नहीं, यहां के मुसलामानों ने भी कुछ कम नहीं किया। जब वह सैक्यूलरिज्म का धागा मिला, आजाद की आवाज पर, नेहरू की आवाज पर, गांधी की आवाज पर जब ये नारा मिला तो उन्होंने भी इस मुल्क को अपना लिया। हमारी पाकिस्तान से तीन-तीन जंगे हुई लेकिन मरने वालों में ब्रिगेडियर उस्मान थे, शेरवानी ब्रदर्स थे जो कश्मीर पहुंच गए। हमारे कर्ण सिंह जी यहां बैठे हुए है, वे जानते है कि यहां के मुसलमानो ने अब्दुल हमीद पैदा किया, अब्दुल कलाम पैदा किया, इस मुल्क में जाकिर हुसैन सरदार हुए, हमारे सरदार जी सदर हुए, कौन नहीं हुआ? ऐसा यह हिन्दुस्तान है और इस हिन्दुस्तान को खत्म करने की कोशिश की जा रही है, प्रयोगशाला बनाई जा रही हैं।

महोदय, मैं सच कह रहा हूं कि मीडिया ने इस बार जो काम किया है,उसमें डेमोक्रेसी के चौथे खम्भे का काम किया है। अगर उसने बताया नहीं होता तो हमें मालूम नहीं होता कि लोगों को जिंदा गया है, हमें मालुम नहीं होता कि पेट के बच्चे कत्ल किए जा रहे है, हमें मालुम नहीं होता कि 60 दिन के बाद भी एफ.आई.आर. नहीं लिखी जा रही हैं, हमें मालुम नहीं होता कि औरतो का सरेआम रेप किया जा रहा है ।

आप कह सकते हैं कि ह्रयूमन बीइंग हैं तो रिपरकशन हो गया है, कोई बात ऐसी हो गई है कि वहां पर जो वाकया हुआ, यह उसका रिपकरशन है। वह कैसे यह वाकया हुआ? यह किस चीज का रिपरकशन था? यह तो वह नफरत का माहौल है जो पिछले 10 साल से,15 साल से आपकी कोशिशों से उबलकर इस तरह पैदा हुआ है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप चेयर को एड्रैस कीजिए ।

श्री खान गुफरान ज़ाहिदी : महोदय, मैं चारो तरफ देख रहा हूं, चेयर भी इसी में शामिल है। महोदय, 10 साल पहले जो नफरत का माहौल बना था, वह नफरत का माहौल धीरे-धीरे बढ़ता गया। जब सरकार फिरकापरस्त लोगों को क्रेडिबिलिटी देगी,जब उनके सिर पर हाथ रखेगी, जब उनको अपनाएगी तो यही फैसले आएंगे। कहते है कि वहां मोहल्लों में लिखा हुआ है कि" यह अन्दर की बात है, पुलिस हमारे साथ हैं" । बगैर पुलिस के कुछ नहीं हो सकता ।

महोदय, एक साइकोलॉजिस्ट ने एक थीसिस लिखी है और उसमें 4 प्वाइंट कहे गए हैं कि हंगामा करने वाले किलर्स जब बाहर निकलते है तो पहले वे डरते है कि कहीं मैं न मार दिया जाऊं। इसलिए लीगल हिस्ट्री में कहा गया है कि कातिल सबसे बड़ा बुजदिल होता है और यही हुआ । अहमदाबाद में लोग बाहर निकले, उनको अहसास था कि हम मारे नहीं जाएंगे हमारे

ऊपर कोई विपदा नहीं आएंगी, हम जेल नहीं जाएंगे, हम घर वापस आएंगे, चलो दुकानें लूट लो। मैं आज भी यह कह रहा हूं कि क्या आपने गुजरात में आर्मी के डिप्लॉयमेंट में देंर की, क्यों देर कीं?

क्यों देर की क्या आर्मी को आपने हैंड ओवर किया? नहीं किया। कत्ल हो रहें हैं, लोग मारे जा रहे हैं। लेकिन आज भी यह नहीं हुआ है तो हम कैसे यकीन करें। क्या-क्या चीजें हुई इससे पार्टी के एटीटयूड का पता चलता है। वह कैसे? कम्पनसेशन में भी वहां डिफ्रेंस हैं।.....(व्यवधान).....

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : गुफरान साहब, आपका नौ मिनट हो चुका है।

श्री खान गुफरान जाहिदी : अब हमने तो घड़ी देखी नहीं हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आपकी पार्टी का 18 मिनट था। वह मैंने बतला दिया है।उसके बाद आप कितना बोलेंगें यह आप तय करें।

श्री खान गुफरान जाहिदी : आप जितनी इजाजत देंगे उतना टाइम ले लूंगा।

उपसभाध्यसक्ष (श्री नीलोत्पल बसु): मैं तो ज्यादा इजाजत नहीं दे सकता। कुल मिलाकर आपकी पार्टी का टाइम 18 मिनट था, आप 9 मिनट बोल चुके है। टाइम का बंटवारा आप करिए।

श्री खान गुफरान जाहिदी : मैं कोशिश करूंगा कि जल्दी से जल्दी बात खत्म कर दूं ताकि मेरे अन्य साथियों को मौका मिल जाए।

यह नफरत की सौदागिरी अब बहुत नहीं चलेगी। 1947,1948,1949 में जो दस्तखत हो गए, जो आत नारा था कि सारा हिन्दुस्तान उसमें लगा हुआ है, आज भी इस सदन में और उस सदन के मेंबरों की तादाद मिलाई जाए तो आज भी यह महसूस होगा कि 30 सेक्युलर भाई है, बहुत मुश्किल से एक भाजापा भाई है। भाई वहां भी है। लेकिन मैं सारे हिन्दुस्तान को मुबारकबाद देता हूं कि अहमदाबाद की राम रहीम नगरी को कुछ नहीं हुआ, आपस में बैठ कर फैसला ले लिया गया। कोई टैंशन नहीं पैदा हुआ। यह वहां लहर हैं, यह चीजें हैं वहां। हमने तो वहां लाशों के बारें में पूछा। वहां लाशें बहुत दिनों तक पड़ी रही। उसके लिए एक शेर हैः

बहशियानापन सियासी फन बना इस देश में,
इसलिए मिलती हैं लाशें बे-कफन इस देश में।

मैं आपसे सिर्फ यह अर्ज करना चाहता हूं कि सारा हिन्दुस्तान जागा है और इसके लिए मीडिया मुबारकबाद के काबिल है क्योंकि अगर उसने नहीं बताया होता, सच्चाईयों को नहीं लिया होता तो न जाने वहां ये हुकूमत क्या करती। लेकिन नादिरशाह आज नहीं रहा, मोदी भी नहीं रहेंगे, मादी को हटना लाजिमी है। मैं सिर्फ अपनी चंद डिमांड रखकर अपनी बात को खत्म करना चाहता हूं, मौका ही नहीं है क्या करें। सिर्फ डिमांड रखकर अपनी बात खत्म करता हूं। एक मिनट में अपनी बात खत्म कर लूंगा।

मुझे इन पर भरोसा नहीं है क्योंकि जो अच्छे अफसर थे उनका ट्रांसफर किया गया, लिस्ट बना ली गई हैं। वी0एच0पी0 के नेता ने कहा कि हमने लिस्ट तैयार की थी।..(व्यवधान)..ऊपर की तीसरी मंजिल जल गई। उपसभाध्यक्ष जी, मैं वहां होकर आया हूं। नीचे की मंजिल भी जल गई और बीच में जो मॉयनिरीटी का ऑफिस था, उसको भी जला दिया गया, जिसे मैं देख कर आया हूं।..(व्यवधान)...

श्री एस0एस0 अहलुवालिया : कोई भी ऐसा पब्लिकेशन जिसे आप आथंटिकेट नहीं कर सकें तो क्यों दे रहे हैं।....(व्यवधान)...

श्री खान गुफरान जाहिदी : मैं कोई आथंटिकेट नहीं कर रहा हूं...(व्यवधान)...

श्री एस0एस0 आहलुवालिया : आथंटिकेट नहीं कर रहे हैं तो क्यों पढ रहें हैं?..(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : अहलुवालिया जी, उन्होंने कोट नहीं किया हैं।..(व्यवधान)...

श्री एस0एस0 अहलुवालिया : आप रिकार्ड देखिए क्या लिखाहैं।...(व्यवधान)..उन्होंने बोला हैं कि वी0एच.पी0 ने लिस्ट निकाल दी।..(व्यवधान)..लेकिन जिक्र करने की क्या जरुरत है । ..(व्यवधान)..

श्री एस0एस0 अहलुवालियाः जिक्र करने की क्या जरुरत है? ..(व्यवधान)..

उपसभापति (श्री नीलोत्पल बसु): आपको ऐसे कमेंट नहीं करना चाहिए था, आप बैठ जाइए ।..(व्यवधान)..

सीधी बात हो रही है चेयर के साथ ।

श्री एस0एस0 अहलुवालिया : आप रिकार्ड मंगा लीजिए, जो उन्होंने कहा है उसे देख लें।

उपसभाध्यक्ष(श्री नीलोत्पल बसु) : हम देख लेगे। उन्होने उद्धत नहीं किया हैं...(व्यवधान)..आप बैठिए।...(व्यवधान)..आपका जो पोइंट हैं, उस पोइंट में कोई जान नहीं हैं क्योंकि उन्होंने उद्धत नहीं किया सिर्फ उन्होंने जिक्र किया है। जहां तक जिक्र करने का सवाल है उसके लिए आंथटिक...(व्यवधान)...

श्री एस0एस0 आहलुवालिया : सर, गो थ्रू दि रिकार्ड।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप मुझे बोलने दीजिए। मैंने आपकी प्रॉब्लम सुन ली है।

श्री खान गुफरान जाहिदी : सर, हम तो आंखों देखा हाल बता रहे हैं, सुनने वाली बात नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप मुझे एड्रेस कीजिए। ....(व्यवधान).. आप तब तक खत्म कर दीजिए।

श्री खान गुफरान जाहिदी : सर, मैं चाहता हूं कि अगर एतबार बहाल करना है, तो यह प्रयोगशाला का सिस्टम बंद होना चाहिए, जल्दी बंद होना चाहिए। आपको धारा 355 में जो अख्तियारात मिले है, उनके अनुसार कार्य कीजिए। दूसरा मेरा मतलब है कि आप मोदी को हटाकर कोई और दूसरा बेहतर आदमी पेश कर दीजिए। इससे शायद एतबार बहाल हो जाये। तीसरी बात मुझे यह कहनी है कि पेपर इश्यु कीजिए ताकि मीडिया जो कह रहा है, इधर कह रहा है, उधर कह रहा है, कितने लोग मरे हैं, कौन-कौन से लोग मरें है, कितनी जायदादें तबाह हुई हैं और आप कितनी इमदाद देने जा रहे हैं, इसका एक मानीटरिंग सेल, टास्क फोर्स पीएमओ में रखिए या अपने पास रखिए। आप जल्दी फैसला लीजिए जिससे कि रिलीफ की तकसीम बरसात के मौसम से पहले हो जाय।....समय की घंटी..महोदय, मैं दों मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूं।

उपसभाध्यक्ष(श्री नीलोत्पल बसु) : आप दो मिनट बोलेंगे तो आजमी साहब के लिए समय नहीं बचेगा।

श्री खान गुफरान जाहिदी : पांच खास मुकामाद जिसकी सीबीआई से एनएचआरसी ने इन्क्वायरी करने के लिए कहा है उसकी जांच रिपोर्ट सीबीआई से तलब करवायी जाय, उसकी जांच करवाई जाय, जो वाकिये हुए हैं और जिनकी एफआईआर नहीं लिखी गई हैं, उनकी एफआईआर लिखवाई जाये। यह कहा गया है कि सामूहिक एफआईआर नहीं लिखी जा सकती है तो इंडिव्युजली एफआईआर लिखी जाय।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : अब आप समाप्त करिए।

श्री खान गुफरान जाहिदी : सुप्रीम कोर्ट के जज के जरिए से गोधरा से लेकर गुजरात के तमाम वाकियात की एक साथ जांच कराई जाय। होम मिनिस्टर साहब का यह कहना कि एक जांच हो रही इसलिए दूसरी जांच नहीं हो सकती है। अगर आप स्टेट गवर्नमेंट से कहकर सुप्रीम कोर्ट के जज से जांच करायेंगे तो वह जांच आटोमैटिक खत्म होगी और यह जांच हो जायेगी । सुप्रीम कोर्ट के जज पर सबका एतबार बहाल होगा। इसलिए मैं आपसे ऐसा करने के लिए कह रहा हूं। ऐसी घटनाओं मं शामिल लोगों के लिए ऐसा कानून बनाया जाए कि जो जांच में दोषी पाया जाय उसको सख्त सजा मिल सके। आज तक जितने कमीशन बने हैं, जितनी जांचे हुई हैं, उनमें किसी को सजा नहीं मिली है। यह भी हवा देती है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : जाहिदी साहब, मैं आपको अखिरी बार बता रहा हूं कि आप समाप्त कीजिए अन्यथा में आज़मी साहब को बोलेने के लिए बुला नहीं पाऊंगा। आप उसके लिए मुझे मत कुछ कहना।

श्री खान गुजरान जाहिदी : अगर दोषी लोगों को सजा दिलवानी है तो उसके लिए सख्त कानून बनाइये जिससे कि आगे ऐसी घटनाएं न घटित हों। मैं यह कह कर अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलेने का समय

दिया है, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । मैं सर्वप्रथम माननीय सदस्य सिब्बल जी की उस बात का जवाब दूंगा, जिस एफआईआर में यह नामिनेटिड हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : एक मिनट। मै आपको एक बात बताना चाहता हूं कि आपकी पार्टी के सिर्फ 14 मिनट बचे हुए हैं। आपके अलावा श्री संघ प्रिय गौतम जी भी बोलने वाले हैं। आप समय का ध्यान रखिएगा।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : उपसभाध्यक्ष जी, आप मुझे सात मिनट का समय दे दीजिए। आप डेढ़ मिनट पहले साढ़े पांच मिनट में घंटी बजा दीजिएगा। मैं समय से अपनी बात समाप्त कर दूंगा। जो नामजद हैं वे अरेस्ट क्यों नही हुए। दिंनाक 27 और 28 को वीएचपी और बजरंग दल के लोगो ने मिलकर एक हत्याकांड किया, ऐसा चित्रण यहां पर प्रस्तुत किया गया। यथार्थ यह है कि 27 तारीख को गोधरा से जो लाशें लाई गई थी, वे उनके परिवारजनों के साथ मिलकर संस्कार कर रहे थे और 28 तारीख की रात तक सब लोग मरे हुए लोगों के घरो पर बैठकर शोक प्रकट कर रहे थे। कोई भी बाहर नहीं था। 27 और 28 तारीख को जब लोग अपने प्रियजनों के अंतिम संस्कार में लगें हुए हैं और उनके परिवार के सदस्यो को सांत्वना देने में लगे हैं, उसी दौरान में दस-दस, बारह-बारह जगह पर, चूकिं उन सबके नाम तो मालूम हैं कि यह अध्यक्ष है, यह जनरल सेक्रेटरी हैं, यह फलां है। दस-दस, बारह-बारह जगहों पर एक साथ उनके नाम मौजूद हैं। किस जगह पर थे, या सब जगह पर थे, इसका पता कैसे चलेगा? इसका पता तो पुलिस करेगी। ये लोग इसलिए अरेस्ट नहीं हुए हैं। अगर इनका पता चल जायेगा कि ये कहां थे तो इनको अरेस्ट करने में कोई परहेज नहीं किया जायेगा।

दूसरा, जैसे बहन शबाना जी ने एक उद्धरण दिया था, एक सरकूलर का, कम्यूनलिज्म कॅमबैक के बारे में। मैने उस संबंध में पता लगाया। मुझे पता चला कि जो सर्कुलर हैं, वह न सिर्फ वह बड़ा भारी है बल्कि उसके खिलाफ विश्व हिन्दु परिषद ने एक केस लॉज किया है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप जिस शब्द का इस्तेमाल कर रहे है और जिनके बारे में इस्तेमाल कर रहे हैं, वह यहां मौजूद नहीं है। यह शब्द ऐक्सपंज कर दीजिए।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : महोदय, मैं उसके बारे में कह रहा हूं कि जो सर्कुलर है,....(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : किसी के बारे में जो सदन में जो सदन में मौजूद नहीं है, उसके बारे में जो शब्द आप इस्तेमाल कर रहे हैं...

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : सर्कुलर कैसे मौजूद होगा। सर्कुलर तो उन्होने कल पेश किया, वह मौजूद है। मैं सर्कुलर के बारे में कह रहा हूं, शायद आपने मेरी बात पर ध्यान नही दिया।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : मैं ध्यान दें रहा हूं।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : मैं सर्कुलर के बारे में कह रहा हूं जो सदन में मौजूद है।

---

* Expunged as ordered by the Chair.

...(व्यवधान)...

श्री राजू परमार (गुजरात) : बहन शबाना जी के बारे में आपने बोला।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : बहन शबाना ने वह सर्कुलर दिया है जो कल पेश किया गया।

SHRI K. NATWAR SINGH (Rajasthan) : Mr. Singhal, did you use the word * or dedicated *?

SHRI B.P. SINGHAL: I said the circular is * मैंने उससे कहा ।

SHRI K. NATWAR SINGH (Rajasthan) : No, no. I am asking you "Did you use the word * or dedicated *? *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Natwar Singhji, please *...(Interruptions)...* Mr. Sjnghal, listen to me. As per whatever little English I understand, is attributed to a person.

SHRI B.P. SINGHAL: No, Sir. * is attributed to an action, and not to a person. * is an act.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : So, what was the act?

SHRI B.P. SINGHAL: Sir, it is an act.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : Mr. Singhal, you are referring to a circular. A circular cannot be *. It can be a circular. That is what Mr. Natwar Singh wants to know.

SHRI B.P. SINGHAL: Sir, I know this much of English that is an act.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): My understanding or misunderstanding of English is that you should have referred to the circular.
SHRI B.P. SINGHAL: All right, Sir. By going into all this, I do not want to reduce my time, जो पैफलेंट दिया था, उसके खिलाफ पिछले महीने विश्व हिन्दु

∗ Expunged as ordered by the Chair.

परिषद ने फॉर्जरी का केस पुलिस में दिया है कि किस तरह से वह निकालकर पब्लिश किया गया है, वह नितांत मिथ्या है, उसके खिलाफ केस चला रखा हैं। कल उसमें से बहुत से लोगो ने उधर से भी और इधर से भी –कोट किया था, कम्यूनलिज्म कमबैक से। यह यथार्त मैं बता रहा था। किस तरह से क्या क्या कहा गया। आज माननीय पचौरी जी ने तो बिल्कुल ही हद कर दी। उन्होंने एन.डी.टी.वी. का उद्धरण देते हूए कहा कि जब बाबरी ढांचा गिरा तो माननीय आडवाणी जी ने कहा कि "This is the happiest day of my life." इससे बड़ा और मिथ्या कौन बोल सकता है। उस वक्त उन्होंने कहा था "This is the saddest day of my life."और हमारे पचौरी जी कहते हैं- उन्होंने एन.डी.टी.वी. का उद्धारण किया-बड़ा ऑथेंटिकेटिड उद्धरण देकर कहा कि आडवाणी जी ने कहा कि "This is the happiest day of my life". इस तरह से काम नहीं चलेगा। ऐसे सम्मानित और दायित्वपूर्ण नेता इतनी अनदायित्व वाली बात कहें, यह बहुत अफसोस की बात है। महोदय, मैं सिर्फ दो उद्धरण प्रस्तुत करना चाहता हूं। मैं पढ़ रहा हूं।

श्री राजु परमार : आप कृपया बता दें कि किसमें से पढ़ रहे है।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : मैं बता दूंगा।

"The Muslim invaders, no doubt, came to India, singing a hymn of hate against Hindus. But, they did not merely sing their hymn of hate and go back burning a few temples on the way. That would have been a blessing. They were not content with so negative a result. They did a positive act, namely, to plant the seed of Islam. The growth of this plant is remarkable. It is not a summer sapling. It is as great and as strong as an oak - the remnants of Hindu and Buddhist culture are just shrubs. Even the Sikh axe could not fall this oak." यह बाबा साहब अम्बेडकर की पुस्तक है-"पाकिस्तान"-उसके पेज 47-48 पर छपा है। दूसरा उद्धरण है... "...In its (secularism's) name politicians again adopt a strange attitude which, while it condones the susceptibilities, religious and social, of the minority communities, it is too ready *...(Time bell)...* to brand similar susceptibilities in the majority community as communalistic and reactionary. How secularism sometimes becomes allergic to Hinduism will be apparent from certain episodes relating to the reconstruction of the *Somanatha* temple... These unfortunate postures have been creating a sense of frustration in the majority community. If, however, the misuse of the term 'Secularism' continues...", mark the words 'if, however, the misuse of the term 'Secularism' continues, "if every time there is an intercommunity conflict, the majority is blamed regardless of the merits of the question, the springs of traditional tolerance will dry up... while the majority exercise patience and tolerance, the minorities should learn to adjust themselves to the majority. Otherwise, the future is uncertain and an explosion cannot be avoided". These are the words of none other Shri K.M. Munshi, the then Minister in the Congress Government and he wrote this letter to Pandit Jawahar Lal Nehru.

5.00 p.m.

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आपका नौ मिनट का समय पूरा हो गया है

SHRI B.P. SINGHAL: Sir, this was the time when secularism had not been included in the Constitution. Therefore, now, it is for us to see that we look upon secularism with the desired amount of desirability and not allowing secularism which rank pro-Muslim communalism. Thank you very much] Sir.

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : नेक्स्ट स्पीकर, मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी, आपके चार मिनट बाकी हैं।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी (मध्य प्रदेश)** : जब हुक्म होगा मैं खत्म कर दूंगा। शुक्रिया सदर-ए-मोहतरम। सदर-एसाहब, मोहतरम अर्जुन सिंह साहब ने जो प्रस्ताव पेश किया हैं मैं उसकी हिमायत करने के लिए खड़ा हुआ हूं। गुजरात में होने वाले बदतरीन फसाद पर बहस का आगाज मैं इस तरह से करना चाहता हूं:

"जलती लाशों का यह जंगल है, दरिंदे हैं यहां
आदमी का दूर तक नामो-निशां कोई नहीं"।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Sorry to interrupt you Mr. Azmi, but I have to say one thing. It is already five o'clock. Now, I have to take the sense of the House for extending the time. So long as the debate continues, we will sit. We will conclude the discussion on the Motion today. The hon. Home Minister, the hon. Prime Minister, the Leader of the Opposition and hen. mover of the Motion will be speaking on Monday at 12.00 noon. Do I have the sense of the House?

SOME HON. MEMBERS: Yes; yes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Mr. Azmi, now, you can continue.

† मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी : " सदर साहब,

चीखता इंसाफ और दम तोड़ती इंसानियत ।
शहर में गांधी के अब जाए अमां कोई नहीं ।
हो रही हैं गालबन त्रिशूल से ततहीरें-नस्ल,
ऐसा लगता हैं मेरा हिन्दोस्तां कोई नहीं ।
ज़लज़लें भी ज़ालिमों को दे न पाए कुछ सबक,
क्या अहिंसा का पुजारी अब यहां कोई नहीं"।

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

सरद-ए-साहब, बड़ी लंबी-चौडी गुफ्तगू हो चुकी है। जो गुजरात पर बहस है उसका दायरा मुल्क के हदूद से निकलकर बेनुलअक्वामी सरहदों तक फैल गया है। गुजस्ता दो माह से गुजरात आग और शोलों की लपेट में है। हर तरफ आग और खून का खेल खेला जा रहा है। इस फसाद की हौलनाकी का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वजीरें दाखिला, जनाब एल.के. आडवाणी साहब ने इसी मुअज्जिज़ हाउस में चंद दिन कब्ल ...(व्यवधान)...अरे हम तो मरे ही जा रहे हैं, अब उर्दू भी मारी जाए क्या?...(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष : आप चेयर को संबोधित की जिए।

जनाब आडवाणी साहब ने 24 अप्रैल, 2002 को जानोमाल के नुकसान की जो तफसील दी है, उसके मुताबिक पुलिस फायरिंग में मरनें वालो की तदाद 168, जलाए गए मकानात 10,280, मोटर गाड़ियों की तादाद 3,002, मारे गए ओर जलाएं गए अफरात की तादाद 824, फैक्ट्रियां और दुकानें 12,472, घायल अफरात की तादाद 2,031 है।

सर, गिनतियों का यह खेल तो होता रहता है। सवाल इस बात का नहीं है कि गुजरात में किसने ज्यादती की। मैं तो समझता यह हूं कि गुजरात में सबने ज्यादती की। किसी ने कम ज्यादती की, किसी ने ज्यादा की और हाउस में मुझे यह जसारत करते हुए कतन परेशानी नहीं है कि हम सब लोगों का जमीर कहीं न कहीं मर गया है। सभी का जमीर कहीं न कहीं खुदगर्जियों की करगानगाह में चढ़ा हुआ है, वरन् गुजरात पर सिर्फ बहस ने होती, सारे के सारे लोग इकट्ठा होकर हाउस जैसे 2-4 दिन बंद हो गया, सारा हाउस गुजरात चलता । गुजरात में पहले यह तय करता कि 24 घंटे के अंदर सब कुछ अम्नो अमन में होना चाहिए। उसके बगैर यह हाउस चलाने का क्या मतलब है। इस हाउस को चलाने से आप किसको विश्वास में ले रहे है? इल्जाम पर इल्जाम, एक दूसरे के ऊपर इल्जाम लगाने के बाद लोग उंगली उठाकर चेयर से कहते है कि साहब हमको पीड़ा हो गयी, हमको तकलीफ हो गयी। हमारे खिलाफ यह कहा गया। उनकी पीड़ा देखने के लिए कोई तैयार नहीं, जिनकी पीड़ा पर आज बहस हो रही है। जिन मां और बहनों की मांग का सिंदूर कुचल गया, उन मां और बहिनों की मांग का सिंदूर कोई नहीं वापस ला सकता। इस पर कोई बहस करने को तैयार नहीं । यह क्यों नही तय किया जाता कि गुजरात में अम्नों-अमान कैसे होगा। यह क्यों नहीं तय किया जाता कि गुजरात जैसी घटना फिर नहीं होगी। मैं कहना चाहता हूं और बहुत अदब से कहना चाहता हूं हुक्मरान पार्टी से कि आखिर आप हजरात यह सकेंत क्यों देना चाहते है कि हम हिंदुस्तान में सारे हिन्दुस्तानियों के पक्षधर नहीं है। आप यह सकेंत क्यों देना चाहते है कि हम सारे हिंदुस्तानियो को हिंदुस्तानी मानने के लिए तैयार नहीं है। आप लोग अखिर यह सकेंत क्यों देना चाहते है कि हिंदुस्तान के मुसलमानों के साथ हमारी कोई हमदर्दी नहीं है, आप लोग आखिर यह सकेंत क्यों देना चाहते हैं कि मुसलमानो का खून, खून नही है, पानी है। आप लोग यह सकेंत क्यों देना चाहते है कि हिंदुस्तान के मुसलमानों को गुलामी की जंजीर में बाधंकर हम रखेंगे और हिंदुस्तान के मुसलमानों को हमारे तर्जे तकरीर पर, हमारे तर्जे तहरीक पर चलना होगा...(व्यवधान)...नहीं, मै बिल्कुल सही बोल रहा हूं। बिल्कुल समझकर बोल रहा हूं....(वयवधान)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : ये गलत बोल रहे हैं।..(व्यवधान)...

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** : मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर हिंदुस्तान के मुसलमानों को बरबाद करने का...(व्यवधान)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : पहले कंडेम्न करें फिर....(व्यवधान)..

† **मौलान ओबैदुल्ला खान आजमी** : यह कंडेन्म कैसे करें। फिरकापरस्त आप है, आपकी पार्टी है। मैं कंडेम्न करता हूं आपकी पार्टी को। वहां फिरकापरस्ती आपकी पार्टी ने फैलायी हैं, मैं इसको जरूर कंडेम्न करता हूं....(व्यवधान)...

उपासभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : अहलुवालिया जी आप बैठ जाइए। यह नहीं चलेगा। आहलुवालिया जी आप बैठ जाइए...(व्यवधान)...आप चेयर को सम्बोधित कीजिए Ahiuwaliaji, please, sit down. *(Interruptions)* Maulaniji, kindly keep quiet.

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** : फिरकापरस्ती आपकी पार्टी ने फैलायी है, फिरकापरस्ती बजंरग दल ने फैलायी है, फिरकापरस्ती विश्व हिंदु परिषद ने फैलायी हैं, फिरकापरस्ती आरएसएस ने फैलायी है, फिरकापरस्ती आपने नहीं फैलायी तो किसने फैलायी ...(व्यवधान)..नरेन्द्र मोदी के गुनाह का सबूत चाहिए आपको...(व्यवधान)...

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : आपको यह कहने का अधिकारी नहीं है ...(व्यवधान)..सह बहुत गभीर है ...(व्यवधान)...

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** : क्या चाहिए आपको? ...(व्यवधान)..नरेन्द्र मोदी के गुनाह का सबूत ....(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : अहलुवालिया जी आप बैठ जाइए...(व्यवधान)..अहलूवालिया बैठिए...(व्यवधान)..बैठ जाइए

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** : ...(व्यवधान)..आप लोगों ने आर्डर दे दिया .(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : मौलाना साहब, काफी हो गया। ऐसे बहस नहीं चलेगी। आप चेयर को सम्बोधित करके बात करेंगे..(व्यवधान)...और कोई टिप्पणी करें, उसके ऊपर आप प्रतिक्रिया जाहिर नहीं करेंगे। एकदम नहीं करेंगे।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी** : सर, मैं सीधी बात यह कर रहा था।

उपसभाध्यक्ष : सिट डाउन, आप बैठ जाइए । Chair is on its legs. Please sit down.

---

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

श्री एस.एस. अहलुवालिया : वे रिलेवेंट तो बोलें। स्वीपिंग रिमार्क्स करते हैं...(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप कृपया बैठ जाइए। आप खड़े नहीं हो सकते हैं। अहलुवालिया जी, आप बैठ जाइए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Please sit down. You sit down, please. *...(Interrutpions)...* Sit down.

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** ये हर मामले में इंटरफीयर करेंगे ।..(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप एकदम कायदे के अंदर बोलिए।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** सर, मैं बिल्कुल कायदे के अंदर बोल रहा था। आप मेरी स्पीच निकलवा लें। सर, मैं यह अर्ज कर रहा था कि आखिर एतमाद बहाल करने का कोई रास्ता पैदा होगा या नही।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : अभी आप दो मिनट के अंदर खत्म कीजिए।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** : ठीक है, सर। अगर एतमाद नहीं पैदा होता तो मै आपके माध्यम से आडवाणी जी से यह कहना चाहूंगा...(व्यवधान)...

श्री एस0एस0 अहलुवालिया : यह क्या बोल रहे हैं?...(व्यवधान)...

कई माननीय सदस्य : यह क्या बोल रहे हैं?...(व्यवधान)..

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** : अगर उनकी रक्षा नहीं होगी तो फिर मैं क्या कहूं।...(व्यवधान)..या तो उनकी रक्षा कीजिए।...(व्यवधान)..

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : यह नहीं चलेगा।...(व्यवधान)..

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** और मैं कुछ भी अनपार्लियामेंटरी नही बोल रहा हूं। ...(व्यवधान)..सर, मैं एक लफज भी अनापर्लियामेंटरी नहीं बोल रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : इस तरह से बोलने से कोई फायदा नहीं है।

---

* Expunged as ordered by the Chair.

'Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :**मैं फिर कहूंगा, या तो सरकार मुसलमानों की रक्षा करे और या सरकार कह दे कि हम इनकी रक्षा करने के लिए तैयार नहीं।...(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष : आप खत्म कीजिए। आपका वैसे भी टाइम खत्म हो गया है। आप खत्म कीजिए, प्लीज़।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी :** सर, अगर मैं अनपार्लियामेंटरी बोल रहा हूं...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : नही, अनपार्लियामेंटरी का सवाल नहीं है। ..(व्यवधानन).. आप लोग बैठ जाइये। प्लीज़, यू सिट डाउन। एक मिनट आप सुन लीजिए, धीरज से सुन लीजिए। एक, आप दो में खत्म करेंगे। दूसरा, अपनी बात इस तरह से रखिए ताकि कोई यहां पर जो माहौल है ....(व्यवधान)...

श्री एस0एस0 आहलुवालिया : पहले विद्रडा करें ।..(व्यवधान).. Sir, he is speaking like this to flare up communal tension in the country. *...(Interruptions)...* He should withdraw it first.

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** सर, मै तो गुजरात के सिलसिले में अपनी भावना व्यक्त कर रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : देखिए, प्लीज़-प्लीज़ ।...(व्यवधान)...

श्री एस0एस0 आहलुवालिया : यू विदड्रा वर्ड्ज...(व्यवधान)...

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी :** अगर कोई भी अनपार्लियामेंटरी है तो जरूर विदड्रा कीजिए ...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : What he will do or what he will not do will depend on what the Chair decides. You sit down, please. I have heard you. *...(Interruptions)...* You tell me under what rule he should withdraw that

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी** : सर, आडवाणी जी की कंस्टीटूएसी में यह सब कुछ हो रहा है, क्या यह बात गलत है?

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : हमारी दूसरे मैंबर के साथ बात हो रही है, आप बीच-बीच में क्या बोल

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

रहे है। आपका प्वायंट् ऑफ ऑर्डर क्या है, बताइये, किस आधार पर इनको विदड्रा करना होगा।

श्री एस0एस0 आहलुवालिया : इन्होंने जो कहा *

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : हां, तो क्या बात है। Under what rule do you want this to be done?

SHRI T.N. CHATURVEDI: Inflammatory statements are not permitted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : What is the rule?

SHRI S.S. AHLUWALIA: Why are you asking me for the rule?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : I am asking you because you are asking for a certain action to be taken by the Chair. What is the basis on which you want that?

SHRI S.S. AHLUWALIA : You give the rule book to me, I will quote the rule if you want that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : This is casting aspersion on the Chair. Being a senior Member, what are you saying? Should the Chair give you the rule book? This is absurd. You must understand what you are saying and what you are doing.

श्री राजू परमार : चेयरमैन से आप कैसे बोल रहें हैं।...(व्यवधान)...

SHRI JANARDHANA POOJARY (Karnataka) : Sir, I am on a point of order.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : What is the rule under which you want to raise the point of order, Mr. Poojary?

SHRI JANARDHANA POOJARY: Parliamentary customs and etiquette. Handbook for Members of Rajya Sabha.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : I do not know. I want the rule under which you are raising this point of order?

SHRI JANARDHANA POOJARY: I am just quoting it. Please hear me.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : What is the rule?

SHRI JANARDHANA POOJARY: Parliamentary customs and etiquette.

---

* Expunged as ordered by the Chair.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: Sir, rule 238 deals with the rules to be observed while speaking. Therefore, if any Member violates the conditions laid down under rule 238, the rules he will have to observe while speaking, you just find out. You please find out whether any of these conditions is violated by the speaker and then you rule out. Otherwise, you cannot deal in vaccum. These are specific provisions. "A Member while speaking shall not ....(i), (ii), (iii), (iv) and (v)....", and there is an Explanation. On the basis of them, kindly ascertain from those who are raising objections under which clause, under which section, they are objecting.

SHRI S.S.AHLUWALIA: I will quote clause (vii) of Rule 238. It says: "Utter treasonable, seditious or defamatory words." * I These words are not only seditious but also *...(Interruptions)...*

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** सर, मै यह जानना चाहता हूं कि मै ने क्या कहा है?

श्री एस0एस0आहलुवालिया : * I What do you mean by this ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Mr. Ravi Shankar Prasad, why are you shouting? Shri S.S.Ahluwalia is intelligent enough to make his point.

श्री मूल चन्द मीणा (राजस्थान) : अगर मुसलमानों को नहीं बचा सकते* ...(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप कैसे खडें हो गए। मरे ख्याल में प्रोसीडिंग्स से पूरा भाषण देखकर उसे निकालना पडेगा । Anything which is not supported by what is there in Rule 238 *(Interruptions)...*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, you can call for the record. You can see the record. *...(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : The Chair will take an appropriate decision. If anything unparliamentary has been said, I will expunge the same from the record. *...(Interruptions)...*

SHRI. PRANAB MUKHERJEE: Sir, if anything objectionable has been said, the Chair can delete the same after going through the record. *...(Interruptions)...*

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of debate.

* Expunged as ordered by the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU).: Mr. Ahluwalia, you cannot direct the Chair like this. You are giving directions to the Chair. *...(Interruptions)...*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, I am not directing anything to the Chair. My humble submission to you is that only by expunging such things from the record will not serve the purpose. We have to restrain such Members from uttering such words in future also. That is why I say that the hon. Member should withdraw his words before he is allowed to speak. *...(Interruptions)...*

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** सर, मुझे बोलने दीजिए ।...(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप मुझे बोलने दें नहीं तो आप यहां पर आ जाइए। My point is that we will go through the record, and if something contrary to rule 238 is there, it will be expunged. Secondly, on the basis of the rule, I request the hon. Member to conclude his speech within two minutes, keeping in view this point.

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : सर, मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि मेरे पास इतने टेलिफोन वहां से आ रहे हैं और लोग कह रहे हैं कि आप आडवाणी जी से कह दीजिए*..(व्यवधान)...मैं आवाम की भावना व्यक्त कर रहा हूं। ...(व्यवधान).. ह्लालात कितने खराब हैं

SHRI S.S. AHLUWALIA: How can he say so even after your ruling, Sir? फिर वही बात कह रहे हैं...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Mr. Ahluwalia, what do you think? ...(व्यवधान)..आप क्या बोल रहे है? आप सुनने भी नहीं देगें और सुनने के पहले ही चिल्लाना शुरू कर देते हैं। Do you think that by doing so, you are making your point more forcible? *...(Interruptions)...* I am appreciating everybody.

श्री भारतेंन्दु प्रकाश सिंहल : सर, आप की रूलिग का कोई प्रभाव नहीं हुआ है ।

THE VICE CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : Please sit down. *...(Interruptions)...* I have already mentioned as to what I am going to do, and time and again, I am repeating the same thing. ..(व्यवधान)..आज़मी जी, यह जो बात आप कहने जा रहे है, इस से कोई लाभ नहीं हो रहा है। आप जिस तरह की बात को

---

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of debate.

* Expunged as ordered by the Chair.'

रख रहे हैं, वही बात आप ऐसे रखिए ताकि हमारा जो रूल 238 है और जिस के बारे में श्री प्रणव मुखर्जी ने बताया है, उस को ध्यान में रखते हुए एक मिनट में आपनी बात समाप्त कर दीजिए।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** : सर, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : जो आपकी शिकायत है, वह इस तरह से सदन में बोलकर पुरी होगी, ऐसा आपका सोचना ठीक नहीं है।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी** : सर, मेरी सोच सिर्फ इतनी है कि हर हालत में अमन कायम होना चाहिए।

श्री एस0एस0 आहलुवालिया : यह हम भी चाहते हैं।...(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप जानते है, तो फिर दोबारा बोलने की क्या जरूरत है?

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** बोलनें नहीं देंगे ...(व्यवधान)... उन का क्या अधिकार है कि बोलने नहीं देंगे ?

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप हर बात पर टिप्पणी मत कीजिए।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी :** इत्तफाक की बात यह है कि ...(व्यवधान).. बोलने नहीं दिया जा रहा है, इस का क्या मतलब है? ..(व्यवधान).. बद-अमनी जो फैलायी जा रही है, इस का क्या मतलब है।...(व्यवधान).. इन को बद-अमनी फैलाने की आदत हो चुकी है ।...(व्यवधान).. मुझे चैयर ने परमीशन दी है। सर, मैं सिर्फ इतना कह रहा हूं कि इत्तफाक की बात यह है कि होम मिनिस्टर की प्रतिष्ठा, हो मिनिस्टर का स्टेटस और होम मिनिस्टर की जिम्मेदारी कोई मामूली जिम्मेदारी नहीं होती ।

मुल्क का होम मिनिस्टर मुल्क की अवाम का सरपरस्त होता है, गर्जियन होता है, होम मिनिस्टर साहब की तरफ उंगली नहीं उठनी चाहिए। अगर किसी दूसरे सूबे में यह होता तो भी होम मिनिस्टर साहब की बड़ी जिम्मेदारी थी। अवाम के हम प्रतिनिधि हैं। पब्लिक जो कुछ हमसे कहती है, हमारा यह फर्ज बनाता है कि पार्लियामेंट के फोरम से या होम मिनिस्टर के फोरम से हम पब्लिक की बात को सरकार तक पहुंचाएं । अगर हमारे इस हक को मारने की कोशिश की जाए तो हम सख्त एतजाज करेंगे। दूसरी बात, हम यह कहना चाहेंगे और बड़े अदब से कहना चाहेंगे कि अगर किसी की शान में कोई गुस्ताखी हमारे जुमले से होती है, अगर हमारा कोई जुमला गैरपार्लियामानी होता है तो हम दूसरो की तरह ज़िद करने के लिए तैयार नहीं। मुल्क के कानून के लिए, मुल्क की गरिमा के लिए, हिन्दू मुस्लिम सौहार्द के लिए, आपसी भाईचारे के लिए

---

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

हम हर जगह झुकने के लिए तैयार है, मगर शर्त यह है कि वह उसूले अखलाक, इंसाफ की बुनियाद पर कोई गिल्टी साबित की जाए। धौंस में अगर गिल्टी साबित की जाएगी तो किसी की धौंस को हम मानने के लिए तैयार नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : अब आप खत्म करें।

† **मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी :** सर, अखिरी बात, यह इतिफाक की बात है कि हमारे होम मिनिस्टर साहब की कर्मभूमि जिस बदअमनी का शिकार है, मैं नहीं समझता कि उनकी पीड़ा मुझसे कहीं कम होगी , इसलिए कि उनकी ज्यादा जिम्मेदारी है। इतिफाक की बात यह कि उनकी जन्मभूमि से लेकर उनकी कर्मभूमि तक जिस तरह की आग लगी हुई है, उनको खुदा ने उस मुकाम पर बैठाया है, जहां से वह इंसाफ और अदल का तराजू लेकर यह साबित करें कि तारीख हमकों इंसाफ करने वाले हकिम की हैसियत से दुनिया के सामने पेश करेगी। आज उनके ऊपर हमारा सबसे ज्यादा दायित्व आ गया है। मैं सीधे सीधे होम मिनिस्टर साहब से गुजारिश करूंगा कि आप अपनी कंस्टीट्यून्सी नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान को देखें, जिसकी जिम्मेदारी आपकी है। यह कोई अच्छी अलामत नहीं है कि हिन्दुस्तान के आपसी सौहार्द के बारे में दूनिया टिप्पणी करे। इसलिए मूल्क की इज्जत की खातिर हिन्दु मुस्लिम सदभाव की खातिर गुजरात में जो पीडित लोग हैं उनकी पीड़ा को देखकर उनके अंदर अमन बहाल करने की खातिर आप उपयुक्त कदम उठाएं और तमाम साथियों की तरह मेरा भी यह मानना है कि श्री नरेन्द्र मोदी जी के रहते हुए उस सर-जमीन पर कहीं से भी लोगों को इंसाफ नहीं मिल सकता । अगर आप जुबाने ,खल्क को नहीं जानना चाहते और उनको इंसाफ नहीं मिलता तो भी वहां के लोग चिल्लाते हैं और कहते हैं कि हमको खड़ा करके मार दीजिए। शुक्रिया।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तरांचल) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, श्री मनमोहन सिंह जी द्वारा प्रस्तुत और श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा संपादित प्रस्ताव को सारे सदन ने एकमत से स्वीकार कर लिया था, नेता सदन के माध्यम से सराकर ने उस प्रस्ताव को अक्षरशः स्वीकार कर लिया था, इसलिए मैं समझता हूं कि इस पर कोई चर्चा से कोई तथ्य प्रकाश में आएंगे, अच्छे सुझाव सामने आएंगे, अच्छे विचार सामने आएंगे, सहयोग की भावना सामने आएगी, जिससे समस्या का समाधान होगा, हिंसा बंद होगी, राहत कार्य में गति आएगी, सामजिक सौहार्द बनेगा, कानून-व्यवस्था राज्य की सहीं होगी, लेकिन मुझे अफसोस है कि कल जो यहां पर चर्चा हुई वह प्रस्ताव के रूप के खिलाफ थी । बहुत से माननीय सदस्यों ने चर्चा में फूहड़ भाषा का प्रयोग किया, अभद्र व्यवहार किया, सदन की गरिमा को गिराया और भाषण दिए, जिनसे सौहार्द के बजाय लोगों की भावनाएं भड़के।

महोदय, जहां हमारे दायित्व हैं, हमारे अधिकार हैं, वहीं हमारे कर्त्तव्य भी है , जिनका उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 51(ए) में दिया है। संविधान का अनुच्छेद 51(ए) के भाग "ई" में कहा गया है ।" It shall be the duty of every citizen of India to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities".

† Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the debate.

हमने, इस सदन के लोगों ने अपने दायित्व का निर्वाह नहीं किया, हमने इसकी अवहेलना की है। जहां तक इस प्रस्ताव का प्रश्न हैं, मै इस प्रस्ताव की अखिरी लाइन पढ़ता हूं, तथा हिंसा के शिकार व्यक्तियों को प्रभावी राहत और पुनर्वास की व्यवस्था करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 355 के अधीन प्रभावी हस्तक्षेप करे, मैं बताना चाहता हूं माननीय अर्जुन सिंह जी और श्री मनमोहन सिंह जी कि इस सराकर ने बिल्कुल प्रभावी कदम उठाए है। प्रभावी कदम क्या हैं? 3 अगस्त, 1949 को संविधान सभा में चर्चा करते हुए, उस समय यह 355 धारा 277(ए) थी, यह नई धारा वहां पर लाई गई थी और उस समय इस पर जो विचार व्यक्त किए गए, अंत में 356 थी, 278,278 (ए) कुजरू साहब ने यह कहा कि इसका दुरूपयोंग हो सकता है। डा0 अम्बेडकर ने कहा कि राजनीतिक दृष्टिकोण से बहुत सी धाराएं हैं जिनका दुरूपयोग हो सकता है, तो क्या करना चाहिए। मान्यवर, मैं आपको बताता हूं कि 3 अगस्त, 1949 को डा0 अम्बेडकर ने क्या कहा :-

He said, "In regard to the general debate which has taken place in which it has been suggested that these articles are liable to be abused, I may say that I do not altogether deny that there is a possibility of these articles being abused or employed for political purposes. But that objection applies to every part of the Constitution which gives power to the Centre to override the Provinces. In fact, I share the sentiments expressed by my hon. Friend, Mr. Gupte, yesterday that the proper thing we ought to expect is that such articles will never be called into operation and that they would remain a dead letter. If at all they are brought into operation, I hope the President, who is endowed with these powers, will take proper precautions before actually suspending the administration of the Provinces. I hope the first thing he will do would be to issue a mere warning to a province that has erred, that things were not happening in the way in which they were intended to happen in the Constitution. If that warning fails, the second thing for him to do will be to order an election allowing the people of the Province to settle matters by themselves."

What has this Government done? It has asked Shri Modi to go to the people and take a mandate from the people. *...(Interruptions)...*

श्री जनेश्वर मिश्र : गवर्नमेंट ने नहीं, पार्टी ने कहा है।

श्री संघ प्रिय गौतम : हां, पार्टी ने ।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : यह टाइम भी आपके समय से जा रहा है।

श्री संघ प्रिय गौतम : आपकी बड़ी कृपा होगी, मैं हाथ जोडकर आपसे टाइम ले रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष : टाइम दे चुका हूं आपको, 4 मिनट था, डबल टाइम हो गया ।

श्री संघ प्रिय गौतम : पार्टी ने कहा। पार्टी इन्वाल्व है, इम्पलिकेटिड है, गवर्नमेंट का पार्ट है, लिहाजा जो इसमें भावना है और इसके अलावा गवर्नमेंट इंटरफिअर नहीं कर सकती धारा 355 के तहत इस केस में, मैं पढ़ता हूं। मै इसके बाद खत्म कर दूंगा, वैसे मेरे पास दो-तीन बातें थी जो मैं कहना चाहता था। एक माइनॉरिटी के बारे में कहना चाहता था।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलात्पल बसु) : आप भटक गए हैं, पहले वह प्वाइंट बोलिए फिर दूसरा प्वांइट बोलिए।

श्री संघ प्रिय गौतम : यह इसी से संबंधित है कि यह माइनॉरिटी शब्द कहां से आया ? पहली बार यह शब्द माइनॉरिटी 1930 में राउंडं टेबल कांफ्रेस में ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : आप 355 पर बोल रहे थे।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैं यह सदन की सूचना और जानकारी के लिए बता रहा हूं कि फर्स्ट टाइम माइनॉरिटी शब्द डा0 अम्बेडकर ने इस्तेमाल किया था फोर डिप्रेस्ड क्लासिस इन राउंड टेबल कांफ्रेस।

महोदय, 8 अप्रैल, 1950 को नेहरू और लियाकत अली का दिल्ली पैक्ट हुआ, उसमें दूसरी बार "रिलीजियस माहनॉरिटी " शब्द का इस्तेमाल किया गया लेकिन श्यामा प्रसाद मुखर्जी जो उनकी कैबिनैट के सदस्य थे, उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया और कैबिनेट से यह कहकर इस्तीफा दे दिया कि I don't believe in religious minority and majority.

महोदय, केवल मुस्लिम माइनॉरिटी नहीं है, सिक्ख माइनॉरिटी है, पारसी माइनॉरिटी है, ईसाई माइनॉरिटी है, बुद्धिस्ट माइनॉरिटी है, जैन माइनॉरिटी है, ये सब माइनॉरिटी हमारे यहां है। मुझे यह बताइए कि हिन्दू-मुस्लिम दंगा ही क्यों होता है? सिक्ख-हिन्दु दंगा क्यों नहीं होता? ईसाई-हिंदु दंगा क्यों नहीं होता? जैन-बुद्धिस्ट-पारसी-हिन्दू दंगा क्यों नहीं होता ? इसकी समीक्षा करनी चाहिए।

महोदय, दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि सब लोगों ने अलग-अलग देश के बंटवारे की मांग नहीं की, मुसलमानों ने ही क्यों की, इसकी भी समीक्षा करनी चाहिए। तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि ऐसे दंगों में हानि ज्यादा मुसलमानों की ही होती है मगर दंगो की शुरूआत यही करते है।...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : गौतम जी, अब आप बैठ जाइए। आपके लिए 4 मिनट का समय था, अब 10 मिनट हो चुके हैं।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैं आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा हूं, मुझे थोडा समय दे दीजिए। मै कोई irrelevant बात नहीं कह रहा हूं, I am talking sense.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : You are putting too much burden on me.

श्री संघ प्रिय गौतम : अच्छा, 5 मिनट का समय और दे दीजिए। श्री एच.बी. काथम ने कहा कि –

"The crucial point to my mind, in this connection, is what is internal disturbance and what is not. Will any petty riot or a general melee or imbroglio in any State necessitate the President's or the Union Government's intervention in the internal affairs of that State." He further stated, "So also a disturbance within a State may range from two people coming to blows to a full-fledged insurrection leading perhaps to chaotic conditions. What are we aiming at? Do we want to confer powers upon the Union Government to see that peace, order and tranquility in the State are not jeopardised, or are we going to confer powers upon the Union Government to intervene in the internal affairs of the State?"

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : गौतम जी, कृपा करके मेरी बात सुन लीजिए। देखिए हमारा विषय बड़ा सीमित है लेकिन आप जिस तरह से, जिस विस्तार से और जिस गहराई से बोल रहे है, उसके लिए जितना समय चाहिए, उतना समय देने का मौका हमारे पास नहीं है। इसलिए आप केवल एक-दो प्वाइंट यहां रख दीजिए।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैं समाप्त कर रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : जो आपका भाषण हो रहा है, इसका सही इस्तेमाल हाऊस में नहीं होगा ।

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदय, मैं समाप्त कर रहा हूं। जो इस सदन में होता है।, I am not doing that.

THE VICE-CHAfRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) I quite understand your sense of outrage *...(Interruptions)...*

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: I am contributing something to the debate of this House.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU) : I have complete appreciation for that. But the kind of time that you need, we do not have it at our disposal. That is the only problem *...(Interruptions)...*

श्री संघ प्रिय गौतम : आप दो-चार मिनट का समय दे दीजिए। मै आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष : गौतम जी, दो-चार मिनट में यह समाप्त नहीं होगा, यह मुझे मालूम है।

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदय, मैं यह कह रहा था कि हम वहां हस्तक्षेप नहीं कर सकते क्योकि लॉ ऐंड ऑर्डर तो स्टेट का सब्जैक्ट है, और स्टेट ऑटोनॉमस है। हर जगह हम इंटरवीन नहीं कर सकते। यह सब्जैक्ट कन्करेंट लिस्ट में नहीं है।This is within the pure autonomy of the State, a law and order situation, हम क्या कर सकते है? हम डॉयरेक्शन दे सकते हैं। डॉयरेक्शन हमने दे दी।

श्री जनेश्वर मिश्र : तमिलनाडु में क्या किया? मद्रास में क्या किया?

उपसभाध्यक्ष : (**श्री नीलोत्पल बसु**) : जनेश्वर जी, उसे छोडिए।

श्री संघ प्रिय गौतम : उपसभाध्यक्ष महोदय, किसी मंत्री ने वहां इस्तीफा नहीं दिया। वहां सरकार का बहुमत है। मुख्यमंत्री को विधानसभा का विश्वास प्राप्त है। पब्लिक के सारे काम सही तरीके से हो रहे हैं। परिवहन नियमित रूप से चल रहा है, रेलगाड़ियो चल रही हैं, हवाई जहाज चल रहे हैं, स्कूल खुल रहे है, परीक्षाएं हो रही हैं, पंचायतो के चुनाव हुए हैं। दफ्तर खुल रहे हैं।

जहां तक उसका सवाल है इसलिए कोई वजह नहीं है, कोई कानून और व्यवस्था बिगड़ी नहीं है और इसके अलावा पुलिस रिपोर्ट लिखी जा रही हैं, गिरफ्तारियां हो रही , मुकदमें कायम हो रहे हैं, शांति सेना बनी हैं, शांति बैठकें हो रही है, राहत कैम्प लग रहे हैं और राहत बंट रही है।

उपसभाध्यक्ष (श्री नीलोत्पल बसु) : गौतम जी, बस शुक्रिया ।

श्री संघ प्रिय गौतम : प्रधान मंत्री जी ने 150 करोड़ रूपया दिया है। यह डायरेंक्शन हैं, यह सब काम हो रहा है। इसलिए इस प्रस्ताव में जो मुददा है हमने उस काम को किया है।हमने इसको इसलिए स्वीकार किया है किसी दबाब भाव या झुक करके इसे स्वीकार नहीं किया है। हम इस काम को कर रहे हैं। जहां तक सरकार के बर्खास्त करने या मुख्य मंत्री को हटाने की बात है इसमें कोई दम नहीं है। इसलिए उन्होंने...(व्यवधान).. मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और धन्यवाद देता हूं आपको जो आपने मुझे इतना ज्यादा समय दिया।

SHRI R. S. GAVAI (Maharashtra): I am very much thankful, Mr. Vice-Chairman, Sir, that you have given me this opportunity to participate in the debate. At the outset, I would like to say that I rise to support the Motion moved by the hon. Member, Shri Arjun Singhji. I am, probably, the last speaker. Therefore, I .have decided not to make any controversial speech, nor to generate any controversy. Whatever observations of mine are sincere and in the greater interest of the nation. I shall make observations that will be non-controversial; rather, my observations will hopefully create some scope for introspection by everybody here.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Mr. Gavai, you have only five minutes.

SHRI R. S. GAVAI: Sir, I will not cross the five-minute limit. You please ring the bell before five minutes, and I will stop then and there.

Sir, my observations relate to the overall concern of all the Members of the House. What has happened in Gujarat? Number one, human beings were burnt and killed. You will agree with these observation. What has happened in the State of Gujarat? The pious declaration about

the relationship between man and man has been totally tarnished. Thirdly, the spirit behind the freedom of religious faith that has been given by the Constitution to the God-fearing people, whatever Gods they may believe in, has been totally forgotten. Sir, the Preamble of the Indian Constitution and the Fundamental Rights given by the Indian Constitution are being totally ignored. What has happened in Gujarat? The prestige and the honour of our nation have been lost in the International world. What is the irony? The irony is that somebody is counting the dead bodies, and somebody else is counting on the votes. What a great irony! What do you mean by the Government'? For whom is the Government? If the Government cannot protect the lives of the innocent people, what should be our conclusion? Such a Government has to go. From the beginning of this whole episode, the whole political atmosphere has been centring round one man and one question. Who is that man? He is Mr. Narendra Modi.

So, Narendra Modi is the single man. What is that single question? That question is, Narendra Modi should go. I am not against Narendra Modi, nor have I any hatred and ill feeling towards him. But as far as the atmosphere in the country and in the House is concerned, forget the political parties, cutting across party lines, what heavens will fall, if the Central Government asks Narendra Modi to go.

Sir, I think that this is an approach which is rational and logical. Sir, before concluding my speech, I would like to say that -- I feel very sorry to say this -- whatever happened in Godhra ought to be condemned; we condemned it. But if anybody is there to say that what happened in Ahmedabad or Gujarat is a reaction to Godhra, then it means that we are deviating from the spirit of the Indian culture and adopting the theory of tooth for tooth, finger for finger, eye for eye. How are this is befitting the Indian culture, whatever religion we may belong to?

Sir, I conclude my speech by giving a small quotation, not a big one like Mr. Gautam, of Dr. Babasaheb Ambedkar. That portion is from the concluding speech of Dr. Babasaheb Ambedkar. He said, "My anxiety is deepened by the reafisation of the fact that in addition to our old enemies in the forms of caste and creed, we are going to have many political parties with diverse and opposing political creeds. Will Indians place the country above their creed or will they place creed above the country, I don't know. But this much is certain that if the parties place the creed above the country, our Independence will be put in jeopardy."

Sir, this very quotation is an eye-opener to everybody. Thank you, Sir.

MESSAGES FROM LOK SABHA

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NILOTPAL BASU): Messages from the Lok Sabha. Secretary-General.

(I) The Constitution (Scheduled Castes) Order (Amendment) Bill, 2002.

(II) The Indian Succession (Amendment) Bill, 2002.

(III) The Tea Districts Emigrant Labour (Repeal) Repealing Bill, 2002.

SECRETARY- GENERAL: Sir, I have to report to the House the following messages received from the Lok Sabha, signed by the Secretary-General of the Lok Sabha:

(I)

"In accordance with the provisions of rule 96 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, I am directed to enclose the Constitution (Scheduled Castes) Order (Amendment) Bill, 2002, as passed by Lok Sabha at its sitting held on the 2nd May, 2002.

(II)

"I am directed to inform you that the Indian Succession (Amendment) Bill, 2001 which was passed by Rajya Sabha at its sitting held on the 3rd December, 2001, has been passed by Lok Sabha at its sitting held on the 3rd May, 2002 with the following amendments:

Enacting Formula

3. Page 1, line 1 -

for '"Fifty-second"

substitute "Fifty-third"